पंचदीप भारती

वर्ष–2016 अंक–11

मुख्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

www.esic.nic.in, www.esic.in, www.esichospitals.gov.in

निगम मुख्यालय में राजभाषा गतिविधियाँ

दिनांक 14 सितम्बर, 2015 को 'पंचदीप भारती' के दसवें अंक का विमोचन करते हुए महानिदेशक तथा वरिष्ठ अधिकारीगण।

दिनांक 23 दिसम्बर, 2015 को वित्त आयुक्त की अध्यक्षता में आयोजित निगम मुख्यालय की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 153वीं बैठक का दृश्य।

दिनांक 16 दिसम्बर, 2015 को निगम मुख्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागी को प्रमाणपत्र देते हुए निदेशक (राजभाषा प्रभारी)।

पंचदीप भारती

(छमाही प्रकाशन)

ग्यारहवां अंक

वर्ष 2016

प्रधान संरक्षक

दीपक कुमार, भा.प्र.से.

महानिदेशक

संरक्षक

यू. वेंकटश्वरलू

वित्त आयुक्त, भा.प्र.से.

मार्गदर्शक

उपेन्द्र शर्मा

निदेशक (राजभाषा प्रभारी)

संपादक

श्याम सुंदर कथूरिया

उप निदेशक (राजभाषा)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व संबंधित लेखक का है। इनसे संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम के सभी कार्मिकों से सुझाव/टिप्पणी तथा सितम्बर, 2016 में प्रकाश्य अंक के लिए पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं जुलाई, 2016 के अंत तक आपकी फोटो, पता एवं दूरभाष संख्या सहित आमंत्रित हैं।

प्रकाशक

राजभाषा शाखा, मुख्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 011-23235778

फैक्स : 011-23234537, 23239867

वीओआइपी : 10011080

ई–मेल : ss.kathuria@esic.in

वेबसाइट : www.esic.nic.in

मुद्रक : **जीवन ऑफसैट प्रेस**

दूरभाष : 9873870464

ई–मेल : jewanpress@gmail.com

(केवल निःशुल्क सीमित वितरण के लिए)

पत्रिका में नेट पर उपलब्ध चित्रों का साभार उपयोग किया गया है।

अनुक्रम

विषय	पृष्ठ संख्या
संदेश	2–4
सम्पादकीय	5
राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3	6–10
दोस्त	10
सामाजिक सुरक्षा व्याप्ति के विस्तार तथा चिकित्सा देखरेख में सुधार संबंधी चुनौतियाँ के लिए क.रा.बी. निगम की प्रतिबद्धता	11–14
किन्नर का विवाह	15–16
कर्तव्य बोध	16
विश्व हिंदी दिवस की महत्ता	17–19
आँख से छलका आँसू	20–21
श्रद्धांजलि	21
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय में हिन्दी दिवस समारोह, 2015 – संक्षिप्त रिपोर्ट	22
निगम मुख्यालय में हिन्दी दिवस समारोह	23
निगम इकाइयों में हिन्दी दिवस समारोह	24–25
जीवन	26
कद और हद	27
सुविधाओं का जंजाल	28
विविधता का फायदा	29
प्राचीन भारतीय विज्ञान और प्रख्यात वैज्ञानिक	30–31
अनमोल वचन	31
रंगीला रे, तेरे रंग में ... यूं रंगा है	32–37
हिंदी को बढ़ते देखा	37
बस काम ही काम	38
भारत में प्रदूषण	39
मनोवैज्ञानिक स्ट्रेस	40
पकड़ प्रीत की डोर मानव पकड़ प्रीत की डोर	41
गलती	42
मासूम की दुआ	42
हिंदी बिना जीना नहीं	43
बधाइयाँ	44
विशेष उपलब्धि	44
आपका पत्र मिला	45–48

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
Website : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

संदेश

क.रा.बी. निगम मुख्यालय के कार्मिकों में हिंदी में मौलिक लेखन तथा अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से प्रत्येक छमाही में किया जा रहा है। इसी क्रम में 'पंचदीप भारती' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन एक सुखद सूचना है। निश्चित ही इसके निरंतर एवं नियमित प्रकाशन से कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुझान बढ़ा है तथा राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में प्रगति हुई है। पत्रिका से जुड़ने वाले कार्मिकों की संख्या में बढ़ोतरी भी हुई है, जो शुभ एवं उत्साहवर्धक संकेत है।

मुझे यह विश्वास है कि 'पंचदीप भारती' का यह अंक भी पिछले अंकों की तरह सुधि पाठकों के मन में हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न करने में सफल होगा।

'पंचदीप भारती' के इस अंक के लिए अपनी रचनाएं देने वाले कार्मिकों से आग्रह है कि वे अपना लेखन कार्य जारी रखें, जिससे अन्य कर्मी भी हिंदी में लेखन हेतु प्रेरित व प्रोत्साहित हों।

शुभकामनाओं सहित,

दीपक कुमार
महानिदेशक

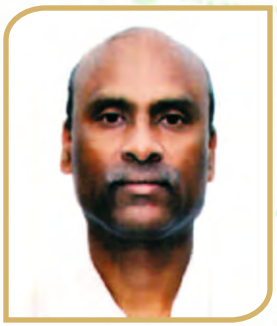

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
Website : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि क.रा.बी. निगम, मुख्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' का ग्यारहवां अंक प्रस्तुत होने जा रहा है। यह सराहनीय है कि निगम मुख्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं और सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है। आशा है पत्रिका प्रकाशन से निगम के सभी कार्मिक सरकारी कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित होंगे, जिससे हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ावा मिलेगा। हम सभी मिलकर हिंदी में कार्य करें, यह हम सबकी साझी जिम्मेदारी है।

पत्रिका से जुड़े सभी कार्मिक प्रशंसा के पात्र हैं।

'पंचदीप भारती' के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

यू. वेंकटेश्वरलू
वित्त आयुक्त

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
Website : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

संदेश

बहुत प्रसन्नता होती है जब 'पंचदीप भारती' के आगामी अंक के प्रकाशन की सूचना प्राप्त होती है, उससे भी अधिक सुखद अनुभूति तब होती है, जब आकर्षक और प्रभावोत्पादक ढंग से अंक तैयार होता है। जानकर पुनः वैसी ही प्रसन्नता हुई कि 'पंचदीप भारती' के ग्यारहवे अंक का प्रकाशन होने जा रहा है।

पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने का एक सबल माध्यम है। यह हमें अपने मनोभावों को हिंदी में खुलकर अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

आशा है 'पंचदीप भारती' के इस अंक में भी अधिकाधिक कार्मिकों को अपने अनुभव तथा उद्‌गार व्यक्त करने का अवसर मिला होगा। पत्रिका की प्रगतिशीलता को बनाए रखने के लिए सभी कार्मिक इसी प्रकार सक्रिय एवं सकारात्मक सहयोग देते रहें।

पत्रिका अनवरत चलती रहे, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

उपेन्द्र शर्मा
निदेशक (राजभाषा प्रभारी)

सम्पादकीय

सुधि पाठकों के स्नेह और सहयोग से पंचदीप भारती एक और सोपान पर पहुंच रही है। पत्रिका प्रकाशन का मूल उद्देश्य सरकारी कार्यालयों में कार्मिकों के मन में हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न करना है। इससे वे अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए भी प्रेरित होते हैं।

यह पत्रिका निगम मुख्यालय की है, परंतु यह सभी अधीनस्थ इकाइयों का भी प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए विभिन्न इकाइयों से प्राप्त रचनाओं, गतिविधियों आदि का इसमें समावेश किया जाता है।

हर बार की भांति इस बार भी प्रयास किया गया है कि पत्रिका का स्तर बना रहे। यही कारण है कि हमारे पाठक इस पत्रिका की सराहना और प्रतीक्षा करते हैं। हम आपके आभारी हैं। यहां एक बात और स्पष्ट करना चाहूंगा कि प्रत्येक रचनाकार की रचना हमारे लिए अमूल्य है चाहे नया रचनाकार हो या पुराना अथवा किसी भी पद पर कार्यरत हो। यह पत्रिका उन्हीं की और उन्हीं के लिए है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं आपका मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन करेंगी।

किसी भी पत्रिका का संपादन करना, एक सृजनात्मक कार्य है। यह भिन्न–भिन्न विधाओं की रचनाओं रूपी पुष्पों को एकत्र कर पत्रिका रूपी पुष्पगुच्छ तैयार करने के समान है। आकर्षक पुष्पगुच्छ के लिए आवश्यक है कि सुंदर, ताज़ा और सुगंधित पुष्प भी उपलब्ध हों। मेरा आशय आप समझ ही गए होंगे। अतः मुझे आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

श्याम सुंदर कथूरिया
उप निदेशक (राजभाषा)

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3

डॉ. पन्ना प्रसाद
पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 हिंदी के संवैधानिक इतिहास में उपबंधों के एक विशाल वटवृक्ष की तरह है, जिसके अस्तित्व की जड़ें भारत के संविधान में पहले से विद्यमान हैं और जिसकी व्याप्ति का विमर्श संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदनों के संकल्पों तक विस्तारित है। अधिनियम की यह एकमात्र ऐसी धारा है जिसकी पाँच उप–धाराएं हैं और ये पाँचों उप–धाराएं संघ और राज्य में कार्यपालिका और विधायिका में हिंदी की स्थिति की व्याख्या करती हैं। इस धारा की रचना वस्तुतः अंग्रेजी के हितरक्षण के लिए हुई है। इसका नाम ही है – संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा का रहना (continuance of English Language for Official purposes of the union and for use in Parliament)।

राजभाषा अधिनियम में वैसे तो कुल 9 धाराएं हैं किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण तीसरी धारा ही है। और यदि धारा 4 में संसदीय समिति के उल्लेख को छोड़ दें तो जहाँ–जहाँ अधिनियम 1963 का उल्लेख हुआ है, प्रायः धारा 3 के लिए ही हुआ है। धारा 3 ही इस अधिनियम का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए 26 जनवरी 1965 को अधिनियम को लागू करते समय केवल धारा 3 ही लागू की गई। शेष धाराएं अलग–अलग समय पर लागू होती रहीं और यह क्रम 01 अक्टूबर 1976 तक चला।

अधिनियम की पृष्ठभूमि

संविधान सभा के सदस्यों का विचार था कि 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू करते ही एकबारगी हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा नहीं बनाया जा सकता। इसलिए आगामी 15 वर्षों तक अंग्रेजी का प्रयोग यथावत जारी रहना चाहिए। संविधान लागू होने के 15 वर्ष बीत जाने के बाद संसद कानून बनाकर यह सुनिश्चित करेगी कि अंग्रेजी को आगे भी रखा जाए। संविधान के अनुच्छेद 344(1) का निर्देश है कि सन् 1955 में एक राजभाषा आयोग गठित किया जाए। आयोग का कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को, संघ के शासकीय कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग और अंग्रेजी के प्रयोग को निर्बाधित करने के बारे में सिफारिश करे। अनुच्छेद 344(3) में पुनः निर्देश है कि ऐसा करते समय आयोग भारत की औद्योगिक सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और

लोक सेवाओं में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक् ध्यान रखेगा। अनुच्छेद 343(3) और अनुच्छेद 344(3) की ये दोनों बातें अहिंदी भाषी व्यक्तियों के बहुत काम आई। उन्होंने समय–समय पर इनका समुचित उपयोग किया।

जैसे–जैसे भाषा परिवर्तन के लिए संविधान में नियत तिथि 26 जनवरी 1965 नजदीक आ रही थी। कुछ अहिंदी भाषी लोगों के दिमाग में बेचैनी और आशंका बढ़ती जा रही थी। यद्यपि तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 7 अगस्त 1963 को घोषित कर दिया था कि अहिंदी भाषी क्षेत्र के लोगों पर हिंदी थोपी नहीं जायगी। प्रधानमंत्री जी की यह दृढ़ राय थी कि अंग्रेजी को निश्चित रूप से, यद्यपि धीरे–धीरे हटा दिया जायगा। इसके पहले भी उन्होंने 4 सितम्बर, 1959 को लोकसभा में सरकार की राय को स्पष्ट करते हुए कहा था कि अंग्रेजी को सह या अतिरिक्त भाषा के रूप में रखा जायगा और वह किसी भी राज्य द्वारा संघ या अन्य राज्यों के साथ पत्राचार में प्रयोग की जा सकेगी।

अहिंदी भाषी लोगों की आकांक्षा और राजभाषा का भविष्य, दोनों में संयोजन आवश्यक था। इसलिए, इस कठिनाई को दूर करने के लिए 10 मई, 1963 को राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया। यह अधिनियम राजभाषा के बारे में सरकार की भविष्य की नीति को कानूनी ढाँचा प्रदान करता है।

धारा–3 का स्वरूप

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3, 26 जनवरी, 1965 को प्रवृत्त हुई। इसमें कुल 5 उप–धाराएं हैं। धारा 3(1) में उपबंध किया गया है कि संविधान के लागू होने की पन्द्रह वर्ष की अवधि बीत जाने के बाद भी संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में कार्य के संव्यवहार के लिए हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग उसी प्रकार किया जाता रहेगा। इस प्रकार अंग्रेजी सह राजभाषा या दूसरी राजभाषा बन जायगी। इस उपबंध में एक अच्छी बात यह हुई है कि संविधान के अनुच्छेद 343(2) में जहां अंग्रेजी को पहले स्थान पर, वहीं इस धारा 3(1) में हिंदी को पहले स्थान पर रखा गया है और अंग्रेजी को उसके बाद अतिरिक्त स्थान दिया गया है। इस उप–धारा में भारत संघ और किसी राज्य के साथ पत्राचार में प्रयोग की जाने वाली भाषा के बारे में भी विचार किया गया है। जैसे –

- किसी राज्य ने यदि हिंदी को अपनी राजभाषा नहीं बनाया है तो संघ सरकार उसके साथ अंग्रेजी में ही पत्राचार करेगी।
- कोई राज्य, जिसने हिंदी को अपनी राजभाषा बनाया है, किसी ऐसे राज्य के साथ जिसने हिंदी को अपनी राजभाषा नहीं बनाया है, यदि हिंदी में पत्राचार करता है, तो उसका अंग्रेजी में अनुवाद भेजा जायेगा।
- कोई ऐसा राज्य, जिसने हिंदी को अपनी राजभाषा नहीं बनाया है, चाहे तो संघ या किसी ऐसे राज्य के साथ जिसने हिंदी को अपनी राजभाषा बनाया है, हिंदी में पत्राचार कर सकता है और उसके लिए अंग्रेजी का प्रयोग बाध्यकर नहीं होगा।

धारा 3(2) :

केन्द्र सरकार के कार्यालयों के बीच आपसी पत्राचार और केन्द्र सरकार तथा उसके नियंत्रणाधीन

निगम/कंपनी के बीच पत्राचार यदि हिंदी या अंग्रेजी में किया जाता है तो उन पत्रों का यथास्थिति, अंग्रेजी या हिंदी में अनुवाद भी भेजा जायगा। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी जब तक इन कार्यालयों के कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता।

इस उप–धारा का तात्पर्य यह है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में पत्राचार में हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के अनुवाद का प्रयोग किया जायगा। और उसका परिणाम यह होगा कि सरकारी कार्यालयों के कार्मिकों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्रदान करने की व्यवस्था की जायगी। इस प्रयोजन को पूरा करने के लिए हिंदी शिक्षण योजना, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो जैसी संस्थाओं की स्थापना की आवश्यकता पड़ेगी। केन्द्र सरकार के कार्यालयों को हिंदी में सक्षम बनाने के लिए और सभी तरह के कार्यालयी अनुवाद कार्य करने के लिए हिंदी अधिकारियों, अनुवादकों आदि का विशाल तंत्र स्थापित करना होगा। ऐसी व्यापक व्यवस्था होने तक स्वाभाविक है धारा 3(2) का अनुपालन दृढ़ता से नहीं हो पायेगा। इसलिए अधिनियम में एक बाध्यकारी उपबंध भी रखा गया – धारा 3(3)।

धारा 3(3)

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत उल्लिखित निम्नलिखित कागज–पत्र हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक साथ अनिवार्य रूप से तैयार, निष्पादित और जारी किए जाने चाहिए। मौजूदा कानून के मुताबिक कोई भी अधिकारी इन दस्तावेजों को केवल एक भाषा में निष्पादित/जारी करने के लिए प्राधिकृत नहीं है।

1. सामान्य आदेश (General Orders)

इसके अंतर्गत निम्नलिखित सम्मिलित हैं :–

- ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार के हों।
- ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हों या उनके लिए हों।
- ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

2. संकल्प (Resolutions)
3. नियम (Rules)
4. प्रेस–विज्ञप्ति (Press Communiques)
5. सूचना (Notices)
6. निविदा प्ररूप (Tender Forms)
7. संविदा (Contracts)
8. करार (Agreements)
9. अनुज्ञप्ति (Licenses)
10. अनुज्ञापत्र (Permits)
11. अधिसूचना (Notifications)
12. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other reports)
13. संसद में प्रस्तुति हेतु प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज–पत्र (Administrative and other reports and official papers to be laid in Parliament)

उपर्युक्त दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ये दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित और जारी किए जा रहे हैं।

धारा 3(3) का अनुपालन न करने वाले व्यक्तियों के खिलाफ संसदीय राजभाषा समिति बहुत सख्त रुख अपनाती है। वह जानना चाहती है कि इस धारा का उल्लंघन करने वाले अधिकारी के खिलाफ संबंधित विभाग ने क्या कार्रवाई की।

धारा 3(3) का अनुपालन एक सांविधिक अनिवार्यता है। इसमें छूट का उपबंध नहीं है। धारा 3(3) के कागजात द्विभाषी रूप में तैयार करते समय ध्यान रखा जाय कि हिंदी रूपांतर, अंग्रेजी रूपांतर के ऊपर/पहले रहे।

हिंदी भाषी क्षेत्रों में धारा 3(3) के कागजात प्रायः मूल रूप से हिंदी में ही तैयार किए जाते हैं। इसलिए केवल अधिनियम के अनुपालन के लिए उनका अंग्रेजी में अनुवाद करना प्रथम दृष्ट्या उपयोगी नहीं लगता। इस विसंगति के निवारण के लिए संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन के चतुर्थ खंड में सिफारिश की कि 'क' क्षेत्र में राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के दस्तावेज केवल हिंदी में ही जारी किए जायें। किंतु सरकार ने उक्त अधिनियम की धारा 3(5) का हवाला देते हुए समिति की सिफारिश नहीं मानी।

धारा 3(4)

धारा 3(4) का संबंध राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 8 से है। धारा 8 में केंद्रीय सरकार को यह शक्ति प्रदान की गई है कि वह अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम बना सकती है। इस प्रकार बनाए गए नियम –

- धारा 3 की उप धारा (1) या उप धारा (2) या उप धारा (3) पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेंगे।
- इन नियमों द्वारा केंद्र सरकार उस भाषा का उपबंध कर सकेगी जिसे संघ के शासकीय प्रयोजन के लिए प्रयोग में लाया जाना है।
- इन नियमों को बनाने में इस बात का ध्यान रखा जायगा कि सरकारी कार्य शीघ्रता और दक्षता के साथ निपटाया जा सके और जन साधारण का अहित न हो।
- इन नियमों में इस बात का ध्यान रखा जायगा कि जो व्यक्ति केंद्र सरकार की सेवा में हैं, जो हिंदी या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण हैं, वे प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें और केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं हैं, उनका कोई अहित न हो।

धारा 3(4) का सारांश यह है कि संघ के शासकीय कार्यों के लिए केंद्र सरकार जिस भी भाषा/भाषाओं का विधान करेगी वे हिंदी या अंग्रेजी से इतर नहीं होगी, सरकार ऐसा करते समय भारत की जनता के हितों का ध्यान रखेगी और केवल हिंदी या केवल अंग्रेजी जानने वाले सरकारी कर्मचारियों के हितों का भी ध्यान रखा जाएगा।

धारा 3(5)

धारा 3(5) संघ सरकार और राज्य सरकार के कार्यों में अंग्रेजी को बनाए रखने का निर्देश देती है। इसके अनुसार –

- 26 जनवरी, 1965 के बाद भी केंद्र सरकार के कार्यों में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग जारी रहेगा।
- जो राज्य या व्यक्ति हिंदी को अपना नहीं सके हैं, वहां हिंदी थोपी नहीं जायगी। वे अंग्रेजी का प्रयोग कर सकेंगे।
- सरकारी कार्यों में अंग्रेजी का प्रयोग तब तक जारी रहेगा जब तक ऐसे सभी राज्यों के विधान मंडलों द्वारा, जिन्होंने हिंदी को अपनी राजभाषा नहीं बनाया है, अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए, संकल्प पारित नहीं कर दिए जाते और जब तक पूर्वोक्त संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात् ऐसी समाप्ति के लिए संसद के प्रत्येक सदन द्वारा संकल्प पारित नहीं कर दिया जाता।

धारा 3(5) के उपबंधों से प्रतीत होता है कि सरकारी कार्यों में अंग्रेजी का प्रयोग कभी समाप्त नहीं होगा क्योंकि नागालैंड जैसे राज्य, जिन्होंने अंग्रेजी को अपनी राजभाषा बना रखा है, अंग्रेजी को समाप्त करने के लिए कभी कानून नहीं बनाएंगे। संतोष की बात यही है कि अंग्रेजी का प्रयोग अधिकांशतः हिंदी के साथ ही करने का विधान है, स्वतंत्र रूप से नहीं। अंग्रेजी को सह राजभाषा का दर्जा जरूर प्राप्त है, किंतु उसके विकास और संवर्द्धन के लिए संविधान, अधिनियम या नियम में कोई उपबंध नहीं है। आठवीं अनुसूची में उसे स्थान नहीं दिया गया और अनुच्छेद 351 में हिंदी की समृद्धि के लिए उससे कोई सहायता लेने की बात नहीं कही गई।

दोस्त

मुकुल वत्स
उप निदेशक,
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

लोग कहते हैं जमीं पर
किसी को खुदा नहीं मिलता है
उन लोगों को शायद दोस्त
तुमसा नहीं मिलता है।

रूहों की नज़दीकियों का
ये आलम है मेरे दोस्त
सामने हो तुम तो मुझे
मेरा ही अक्स दिखता है।

शुरू होता होगा औरों का
दिन नई तारीख के साथ
मेरी तारीख ही नहीं बदलती
जब तक मेरा यार नहीं मिलता है।

दुनियावी गर्दिशों की परवाह
होती होगी औरों को
मेरे कांधे पर हौंसलों का हाथ रखे
हमेशा मेरा यार चलता है।

सामाजिक सुरक्षा व्याप्ति के विस्तार तथा चिकित्सा देखरेख में सुधार संबंधी चुनौतियों के लिए क.रा.बी. निगम की प्रतिबद्धता

प्रणव कुमार
उप निदेशक (जनसंपर्क)
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (श्रम एवं रोजगार मंत्रालय) एक ऐसा सामाजिक सुरक्षा संगठन है, जो समाज के निम्नतर मजदूरी वर्ग में संगठित क्षेत्रक श्रमिक वर्ग के लाभार्थियों को बीमारी, प्रसूति, अपंगता, रोजगार चोट के कारण मृत्यु तथा बेरोजगारी की आकस्मिकताओं में व्यापक चिकित्सा देखरेख तथा नकद हितलाभ प्रदान करता है।

क.रा.बी. निगम दिसम्बर, 2016 तक क.रा.बी. योजना के अंतर्गत स्वास्थ्य तथा नकद सुविधाओं का हितलाभ प्रदान करने के लिए सामाजिक सुरक्षा व्याप्ति का विस्तार कर रहा है। सरकार ने क.रा.बी. निगम के विस्तार के लिए व्यापक लक्ष्य निर्धारित किया है। क.रा.बी. निगम 393 जिलों के चयनित स्थानों के बजाए इन सभी जिलों की संपूर्ण व्याप्ति करेगा। इसके अतिरिक्त, सरकार ने क.रा.बी. योजना के सामाजिक सुरक्षा हितलाभों का शेष उत्तर–पूर्वी राज्यों, जैसे–अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मणिपुर तथा अंडमान व निकोबार द्वीप समूह में भी विस्तार कर दिया है। इसलिए, क.रा.बी. निगम संगठन के लिए करोड़ों नए बीमाकृत व्यक्तियों की व्याप्ति एक चुनौती होगी। यह एक विशाल कार्य है तथा इसके लिए न केवल वर्तमान सुविधाओं का उन्नयन बल्कि पर्याप्त श्रमशक्ति के परिनियोजन की भी आवश्यकता होगी।

इसके अतिरिक्त क.रा.बी. निगम ने क.रा.बी. योजना के चिकित्सा हितलाभों का विस्तार निर्माण कामगारों तथा कुछ असंगठित कामगारों, अर्थात् दिल्ली जैसे चुने हुए महानगरों के रिक्शा चालकों/ऑटो रिक्शा चालकों पर प्रायोगिक आधार पर किया है।

इससे पूर्व, वर्ष 2015 के जुलाई माह में, माननीय प्रधानमंत्री ने क.रा.बी. निगम के दूसरे चरण के सुधार कार्यक्रम–**क.रा.बी. निगम 2.0** का शुभारंभ किया, जिसमें क.रा.बी. योजना में स्वास्थ्य सुधारों को प्रमुख महत्त्व दिया गया जो निम्नानुसार हैं :–

- क.रा.बी. लाभार्थियों (बीमाकृत व्यक्ति तथा उनके परिवार के सदस्य) के **इलैक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड** की ऑनलाइन उपलब्धता।

- **इंद्रधनुष अभियान** : सप्ताह के दौरान अर्थात् प्रतिदिन इंद्रधनुषी रंगों के क्रम में बिस्तर की चादरें बदलना सुनिश्चित करना।

V I B G Y O R

दिवस	चादरों का रंग
रविवार	बैंगनी
सोमवार	जामुनी
मंगलवार	नीला
बुद्धवार	हरा
बृहस्पतिवार	पीला
शुक्रवार	नारंगी
शनिवार	लाल

- आपातकाल में तथा क.रा.बी. निगम अस्पतालों के हताहत/आपातकाल विभाग से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए **चिकित्सा हेल्पलाइन संख्या**–1800 11 3839

- क.रा.बी. निगम अस्पतालों में वरिष्ठ नागरिकों तथा अशक्त व्यक्तियों के लिए **विशेष बाह्य रोगी विभाग**।

रोगी/परिचर्या देखरेख में सुधार हेतु अन्य पहलें

(i) क.रा.बी. निगम ने अब **प्रत्येक राज्य में दो आदर्श अस्पताल** स्थापित करने का संकल्प किया है।

(ii) अस्पतालों के विभिन्न स्तरों पर सार्वजनिक–निजी–भागीदारी मॉडल पर उपयुक्त कैंसर जाँच/उपचार सुविधाएं, हृदय रोग उपचार सुविधाएं तथा डायलिसिस सुविधाएं प्रदान करना।

(iii) **टेलीमेडिसिन** की पद्धति को सुविधाजनक बनाने हेतु प्रायोगिक प्रचालन के लिए प्रस्ताव हेतु अनुरोध पहले ही शुरू कर दिए गए हैं तथा अगले तीन माह में इस परियोजना के आरंभ होने की संभावना है।

(iv) औषधालयों के उन्नयन हेतु विशेष ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। 24 X 7 सुविधाएं प्रदान करने हेतु क.रा.बी. निगम भवनों में स्थित 24 औषधालयों को 30 बिस्तरों वाले सेट–अप में उन्नयन करने हेतु चिह्नित किया गया है।

(v) सभी औषधालयों में चरणबद्ध पद्धति से **सार्वजनिक–निजी–भागीदारी के आधार पर रोग निदान तथा एक्स–रे सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।** दिल्ली के सभी औषधालयों में रोग निदान सेवाएं 30 नवम्बर, 2015 से आरंभ कर दी गई हैं। दिल्ली/नोएडा क्षेत्र के क.रा.बी. औषधालयों में प्रयोगशाला तथा ई.सी.जी. सेवाएं आरंभ कर दी गई हैं।

(vi) **प्रत्येक गर्भवती स्त्री तथा नवजात का ध्यान रखना** : प्रत्येक माँ तथा बीमाकृत व्यक्ति के नवजात शिशु के 100% टीकाकरण के साथ–साथ प्रत्येक गर्भवती स्त्री का सुरक्षित प्रसव सुनिश्चित करने की दृष्टि से उचित देखभाल के लिए उन पर नज़र रखने हेतु दिल्ली में एक प्रायोगिक परियोजना आरंभ की जानी है, जिसके लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत राज्य कार्यक्रम अधिकारी के साथ समन्वय किया जाएगा।

(vii) **प्रत्येक राज्य में माता तथा शिशु देखभाल अस्पताल** : क.रा.बी. निगम ने प्रत्येक राज्य में माता तथा शिशु देखभाल अस्पताल स्थापित करने के प्रतिमानक बनाने हेतु एक समिति का गठन किया है।

(viii) **आयुश** : क.रा.बी. निगम अस्पताल एलोपैथिक उपचार के अतिरिक्त आयुष (आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध तथा होम्योपैथी) के अंतर्गत भी उपचार प्रदान कर रहे हैं। सभी औषधालयों में आयुष की सुविधाओं का चरणबद्ध पद्धति में तथा सभी क.रा.बी. निगम अस्पतालों में योग की सुविधा का विस्तार किया जाना है।

इसके अतिरिक्त, क.रा.बी. निगम ने स्वास्थ्य क्षेत्र में और सुधार किया है तथा हाल ही में सुधारों की एक शृंखला आरंभ की है।

(ix) **आई.सी.यू., सी.टी., एम.आर.आई., कैथलैब तथा डायलिसिस सुविधा की स्थापना** : अब क.रा.बी. निगम अस्पताल सार्वजनिक–निजी–भागीदारी मॉडल पर सभी आधुनिक चिकित्सा उपकरणों से सुसज्जित हैं जिससे बीमाकृत व्यक्ति तथा उनके परिवार के सदस्य क.रा.बी. अस्पताल में एक ही स्थान पर सभी प्रकार के विशेषीकृत उपचार तथा देखरेख प्राप्त कर सकें।

(x) **बहु–क्षेत्र उत्कृष्टता केन्द्र का आरंभ** : क.रा.बी. निगम अस्पताल तथा स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, बसईदारापुर का उत्कृष्टता केन्द्र के रूप में उन्नयन किया

क.रा.बी. निगम चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल, कोयम्बटूर के नवनिर्मित भवन का माननीय प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटन

गया है तथा नेत्र विज्ञान, नेफ्रोलॉजी, बाल रोग, हृदय रोग विज्ञान तथा शल्य चिकित्सा इत्यादि विभागों का इस क्षेत्र के विशेषीकृत विशेषज्ञों की सलाह पर उन्नयन किया गया है।

(xi) **परामर्शदाता अस्पताल प्रबंधक तथा परामर्शदाता प्रबंधक की नियुक्ति** : सभी क.रा.बी. निगम अस्पतालों के चिकित्सा अधीक्षकों की सहायता हेतु सभी क.रा.बी. निगम अस्पतालों में संविदात्मक आधार पर परामर्शदाता अस्पताल प्रबंधक तथा परामर्शदाता प्रबंधक की नियुक्ति हेतु एक भर्ती अभियान आरंभ किया गया है जिससे क.रा.बी. निगम अस्पतालों की सेवाओं में सुधार होगा।

क.रा.बी. निगम प्रत्येक वर्ष कई गुना विकास की ओर अग्रसर है। बीमाकृत व्यक्तियों की व्याप्ति में 1.95 करोड़ (2013–14) से 2.03 करोड़ (2014–15) की वृद्धि हुई है तथा लाभार्थियों की संख्या में भी 7.58 करोड़ (2013–14) से 7.89 करोड़ (2014–15) की वृद्धि हुई है। वर्ष 2014–15 में क.रा.बी. अधिनियम के अंतर्गत कुल 7.23 लाख कारखानों/स्थापनाओं की व्याप्ति की गई है जबकि वर्ष 2014–15 में कार्यान्वित केन्द्रों की संख्या 830 है। इसी प्रकार, वर्ष 2014–15 में कुल आय 11909.44 करोड़ (2013–14) से बढ़कर 13588.58 करोड़ (2014–15) हो गई है।

निःसंदेह क.रा.बी. निगम–2.0 के अंतर्गत क.रा.बी. निगम अपने पुनरुत्थान/सुधार कार्यक्रम द्वारा देश के लाखों कामगारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने में मुख्य संगठनों में से एक बन गया है। यह इस तथ्य से देखा जा सकता है कि वर्ष 2013–14 में चिकित्सा हितलाभ पर खर्च किए गए 4859 करोड़ रुपये की तुलना में 2014–15 में यह व्यय 5714.34 करोड़ है। वर्ष 2013–14 में बीमाकृत व्यक्तियों को प्रदान की गई नकद हितलाभ की राशि 598.68 करोड़ रुपये की तुलना में वर्ष 2014–15 में यह 681.97 करोड़ रुपये है।

डिजीटल इंडिया—क.रा.बी. निगम की ई–पहलें:

- **ई–बिज़ प्लेटफॉर्म** : क.रा.बी. निगम व्यापार को सरल बनाने तथा संव्यवहार की लागत पर अंकुश लगाने के लिए अपनी सेवाओं को एकीकृत (औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग के ई–बिज़ पोर्टल द्वारा नियोक्ताओं का पंजीकरण) करने वाला केन्द्र सरकार का प्रथम संगठन है।

- **अपनी फ्लैगशिप डिजीटल परियोजना 'पंचदीप' के अंतर्गत** क.रा.बी. निगम ने 01 अप्रैल, 2015 से भारतीय स्टेट बैंक तथा अन्य 58 बैंकों के भुगतान गेटवे के माध्यम से नियोक्ता द्वारा **क.रा.बी. अंशदान के ऑनलाइन भुगतान को सुलभ बनाया है।**

- क.रा.बी. निगम संबंधी शिकायतें क.रा.बी. निगम वेबसाइट **'www.esic.in'** या **'www.esic.nic.in'** के माध्यम से दर्ज करने हेतु क.रा.बी. निगम ने 15.08.2015 से एक पृथक **लोक शिकायत मॉड्यूल 2.0** आरंभ किया है।

- दिसम्बर, 2015 में क.रा.बी. निगम अस्पतालों तथा औषधालयों के लिए **समर्पित वेबसाइट 'www.esichospitals.gov.in' का आरंभ** किया गया है।

किन्नर का विवाह

शांति महेन्द्रन
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

हमारे देश भारत के तमिलनाडु राज्य में एक देवता, अरावन की पूजा की जाती है। कई जगह इन्हें इरावन के नाम से भी जाना जाता है। अरावन, किन्नर के देवता हैं इसलिए दक्षिण भारत में किन्नरों को अरावनी कहा जाता है। किन्नर और अरावन देवता के संबंध में सबसे अचरज वाली बात यह है कि किन्नर अपने आराध्य देव अरावन से साल में एक बार विवाह करते हैं। हालांकि यह विवाह मात्र एक दिन के लिए ही होता है। अगले दिन अरावन देवता की मृत्यु के साथ ही उनका वैवाहिक जीवन समाप्त हो जाता है। अरावन के बारे में जानने के लिए हमें महाभारत काल में जाना पड़ेगा।

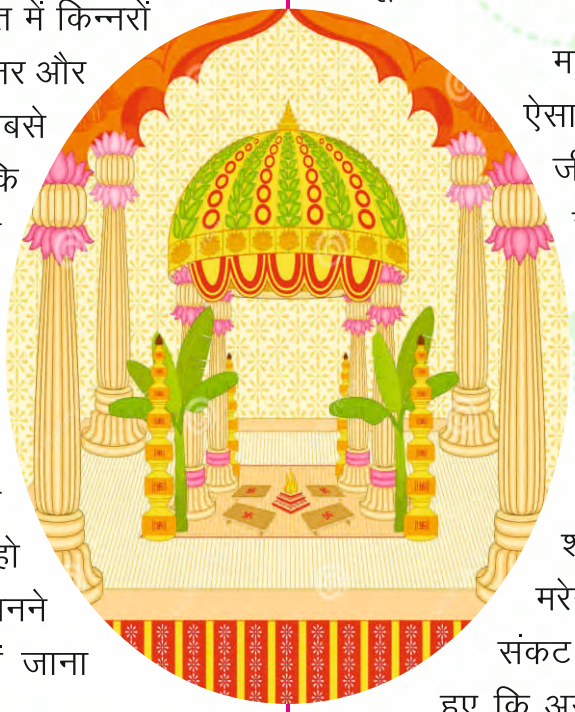

महाभारत की कथा के अनुसार एक बार अर्जुन को द्रौपदी से विवाह की एक शर्त के उल्लंघन के कारण इंद्रप्रस्थ से एक वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया गया था। वहां से निकलने के बाद अर्जुन उत्तर–पूर्व भारत में गए जहां उनकी मुलाकात एक विधवा नाग राजकुमारी उलूपी से हुई। दोनों के मन में एक–दूसरे के लिए मोह उत्पन्न हुआ और दोनों ने विवाह कर लिया। विवाह के कुछ समय पश्चात् उलूपी ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम अरावन रखा गया। पुत्र जन्म के पश्चात् अर्जुन उन दोनों को वहीं छोड़कर अपनी आगे की यात्रा पर निकल गया। अरावन नागलोक में अपनी माँ के साथ ही रहता था। युवा होने पर वह नागलोक छोड़कर अपने पिता के पास आया। उस समय कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध चल रहा था, इसलिए अर्जुन ने उसे युद्ध करने के लिए रणभूमि में भेज दिया।

महाभारत के युद्ध में एक समय ऐसा आया जब पांडवों को अपनी जीत के लिए माँ काली के चरणों में स्वैच्छिक नर बलि हेतु एक राजकुमार की आवश्यकता पड़ी। जब कोई भी राजकुमार आगे नहीं आया तो अरावन ने स्वयं को स्वैच्छिक नर बलि हेतु प्रस्तुत कर दिया, लेकिन उसने शर्त रखी की वह अविवाहित नहीं मरेगा। इस शर्त के कारण बड़ा संकट उत्पन्न हुआ क्योंकि यह जानते हुए कि अगले दिन उसकी बेटी विधवा हो जाएगी, कोई भी राजा अरावन से अपनी बेटी के विवाह के लिए तैयार नहीं हुआ। जब कोई रास्ता नहीं बचा तो भगवान श्रीकृष्ण ने मोहिनी रूप धारण करके अरावन से विवाह कर लिया। अगले दिन अरावन ने स्वयं अपने हाथों से अपना शीश माँ काली के चरणों में अर्पित कर दिया। अरावन की मृत्यु के पश्चात् श्रीकृष्ण उसी मोहिनी रूप में काफी समय तक उसकी मृत्यु का

विलाप करते रहे। अब चूंकि श्रीकृष्ण ने पुरुष होते हुए स्त्री रूप में अरावन से विवाह किया था, इसलिए उसी परंपरा को अपनाते हुए किन्नर भी अरावन से एक रात का विवाह करते हैं और उन्हें अपना अराध्य देव मानते हैं।

कूवगम गाँव में हर साल तमिल नव वर्ष की पहली पूर्णिमा को 18 दिनों तक चलने वाले उत्सव में पूरे भारतवर्ष और आसपास के देशों से किन्नर एकत्रित होते हैं। पहले 16 दिन मधुर गीतों का खूब नृत्य होता है और 17वें दिन अरावन की मूर्ति के साथ किन्नर का विवाह किया जाता है। 18वें दिन सारे कूवगम गाँव में अरावन की प्रतिमा को घुमाकर उसे तोड़ने के पश्चात् दुल्हन बनी किन्नर अपना मंगलसूत्र भी तोड़कर सारे शृंगार को मिटा कर विधवा का रूप ले लेती है और उस दिन खूब विलाप करती है। अगले साल फिर मिलने का वादा करके वे सभी अपने–अपने घर वापस चले जाते हैं।

कर्तव्य बोध

डॉ. जगदीश डागर
पूर्व क्षेत्रीय निदेशक
क.रा.बी निगम

बात हकों की बहुत हुई, अब कर्तव्यों की बात करें
शीश नवाए भारत को जग, ऐसे हम हालात करें।

मौलिक अधिकार जो हैं अपने, उनकी रक्षा संविधान करे
औरों के भी अधिकार हैं कुछ, आओ उनका ध्यान करें।
देशद्रोही आकर कोई, न हम पर अब आघात करे
बात हकों की बहुत हुई, अब कर्तव्यों की बात करें।।

भ्रष्टाचारी रिश्वत लेकर, अम्बार लगाए काले धन का
शानो–शौकत बढ़ेगी ऐसे, धोखा है केवल मन का।
भारत माँ के चरणों में अर्पण, पूरे कर की सौगात करें
बात हकों की बहुत हुई, अब कर्तव्यों की बात करें।।

जग वाले ये खुद सोचें, क्या देंगे इसको जीवन में
कर्तव्य परायण बने रहें हम, इतना भर सोचो मन में।
वतन परस्ती में रहे सदा मन, ये नियम आत्मसात करें
बात हकों की बहुत हुई, अब कर्तव्यों की बात करें।।

तन से ऊपर वतन रहे, बस धूप रहे कि छाँव रहे
देश प्रेम का अटल है वादा, जैसे अंगद का पाँव रहे।
भगत सिंह घर–घर में उपजे, ऐसी अल्लाह बरसात करे।।

बात हकों की बहुत हुई, अब कर्तव्यों की बात करें
शीश नवाए भारत को जग, ऐसे हम हालात करें।

विश्व हिंदी दिवस की महत्ता

श्याम सुंदर कथूरिया
उप निदेशक (राजभाषा)
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

सरकारी प्रयासों से आज विश्व में भारत का स्थान ऊंचा हुआ है। चाहे औद्योगिक क्षेत्र हो, वाणिज्यिक या सांस्कृतिक, देश की प्रगति सभी को दिख रही है। ऐसे में देश की भाषा अर्थात् हिंदी की प्रगति पीछे कैसे रह सकती है। हम भारतीय, देश में बैठकर भले ही सोचते हों कि 'हिंदी को कौन पूछता है' या 'हिंदी की कोई वैल्यू नहीं' परंतु हम यह न भूलें कि इस वैश्वीकरण के दौर में दूर विदेशों में बसे भारतीयों को जोड़ने वाली भाषा हिंदी ही है। यह भारतीयों के मन को मन से जोड़ने वाली भाषा है। जिस प्रकार फ्रांसिसी भाषा फ्रांस की, चीनी (मंदारिन) भाषा चीन की या रूसी भाषा रूस की पहचान है; ठीक उसी प्रकार हिंदुस्तानी अर्थात् हिंदी भाषा हिंदुस्तान की पहचान है। कहने का आशय है कि विदेश में जब कोई व्यक्ति हिंदी भाषा बोलता है तो इसे हिंदुस्तानी होने का पहचान पत्र माना जाता है।

वैश्विक परिदृश्य में हिंदी केवल भारत की भाषा नहीं है, अपितु हर उस व्यक्ति की भाषा है जिसका भारत से संबंध है। हिंदी दिवस मनाने का अधिकार उन्हें भी है। संसार में हिंदी का अलख जगाने के लिए ही 'विश्व हिंदी दिवस' आयोजित करने का निर्णय भारत ने किया। प्रत्येक वर्ष के जनवरी माह की 10 तारीख हमें हिंदी के वैश्विक होने के गौरव की अनुभूति कराती है। यह दिवस हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने एवं इसके प्रचार–प्रसार हेतु जागरूकता उत्पन्न करने का दायित्व बोध कराता है।

विश्व हिंदी दिवस का संबंध 10 से 14 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से है। चूंकि इस दिन, विश्व के जिन देशों में हिंदी भाषा प्रयोग की जाती है, उन्हें एक मंच पर लाने का प्रयास किया गया था, इसलिए उस दिन को स्मरणीय बनाने के लिए ही प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। वस्तुतः 5 से 9 जून, 2003 को सूरीनाम की राजधानी पारामारिवो में आयोजित सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में अन्य प्रस्तावों के साथ–साथ यह प्रस्ताव भी पारित किया गया था कि "विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हो"। अनुपालनस्वरूप भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी, 2006 से यह दिन हिंदी दिवस के रूप में घोषित किया। तब से भारतीय विदेश मंत्रालय नियमित रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाता आ रहा है। वर्ष 2016 में 11वां विश्व हिंदी दिवस मनाया जा रहा है। यदि हम हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त भाषा बनाना चाहते हैं तो विश्व हिंदी दिवस जैसे आयोजन अनिवार्य हो जाते हैं। कहा जाता है कि "जंगल में मोर नाचा किसने देखा" अर्थात् हमारी देवनागरी (हिंदी) कितनी भी वैज्ञानिक क्यों न हो यदि

जब तक हम इसकी विशेषताओं को इस विश्व को नहीं बताएंगे तब तक इसे यथोचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। इसलिए इस प्रकार के आयोजन अपरिहार्य हैं और इनकी उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता तथा इस दिवस के आयोजन पर प्रश्न–चिह्न लगाना भी सर्वथा अनुचित है।

इस प्रकार के कार्यक्रमों को विविधतापूर्ण ढंग से आयोजित करने से ही हिंदी और हिंदी साहित्य की लोकप्रियता बढ़ेगी। वैसे भी प्रत्येक देश की सरकार का यह नैतिक दायित्व होता है कि वह अपने देश की भाषा के संवर्धन हेतु प्रयास करे और जब वह भाषा राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा हो तो महत्त्व और बढ़ जाता है। हमें विश्व हिंदी दिवस का अयोजन उस जोश और उत्साह से करना चाहिए, जिससे इसकी दीप्ति संपूर्ण जग को आलोकित कर सके। ऐसे आयोजन ही विश्व के विभिन्न देशों में प्रकाशित हो रहे हिंदी समाचार–पत्रों एवं पत्रिकाओं को सबल बनाएंगे। विदेशों में स्थित हिंदी संस्थाएं/ संगठन/न्यास आदि भी इससे फलेंगे–फूलेंगे। विश्व हिंदी दिवस भाषिक शक्ति के प्रदर्शन का माध्यम भी है। इस अवसर का आशय संकुचन की बेड़ियों को तोड़कर प्रसार और असीम विस्तार के समुद्र में जाना है।

वैश्विक संदर्भ की चर्चा में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि हम हिंदी को वैश्विक धरातल पर आरूढ़ करने की बात करते हैं तो उससे पूर्व यह सुनिश्चित करना होगा कि हिंदी का पहले अपने घर अर्थात् भारत में निर्विरोध एवं सर्वसम्मत सम्मान हो। हिंदी को लेकर किसी भी प्रकार की असहिष्णुता देश में स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए। पहले अपने ही देश में हिंदी का प्रयोग बिना किसी दबाव के सहर्ष बढ़ना चाहिए, उसके बाद ही हम इस जगत को हिंदी स्वीकारने के लिए कह सकते हैं। यह भी सत्य है कि देश में राजभाषा अधिनियम/नियम आदि के बावजूद हिंदी को उसका हक अभी तक नहीं मिला है। ऐसे में विश्व हिंदी दिवस जैसे आयोजन हिंदी को व्यापक परिप्रेक्ष्य में ले जाकर संभवतः कुछ कर पाएं। अतः यह हमारा नैतिक दायित्व है कि हम इस प्रकार के कार्यक्रमों को सरकारी या गैर सरकारी स्तर पर आयोजित कर सफल बनाएं। हिंदी भाषियों की भूमिका इसमें महती हो जाती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी सशक्त और समर्थ भाषा है। यह एक ऐसी वैज्ञानिक भाषा है, जो व्यक्ति इसे बोलना जानता है, वह विश्व की कोई भी भाषा बोल सकता है, क्योंकि देवनागरी वर्णमाला में वे सभी ध्वनियां हैं, जो विश्व की अधिकांश भाषाओं द्वारा प्रयोग की जाती हैं।

ध्यातव्य है कि विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या काफी अधिक है। कुछ सर्वेक्षण इसे अंग्रेजी और मंदारिन (चीनी) के अतिरिक्त दूसरी या तीसरी बड़ी

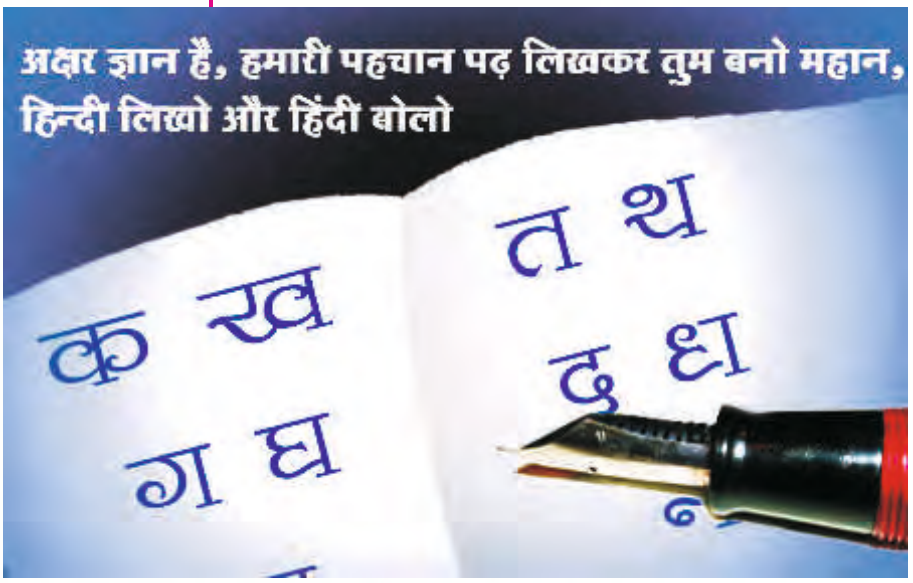

भाषा मानते हैं, तो कुछ इसे पांचवी बड़ी भाषा मानते हैं। डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल तो इसे विश्व के विभिन्न देशों में बसे भारतीयों को जोड़कर पहली सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली भाषा मानते हैं। उन्होंने अपनी बात आंकड़ों सहित प्रस्तुत करते हुए हिंदी जानने वाले लोगों की कुल संख्या 1,20,73,93,250 बताई है। यह विश्व की कुल जनसंख्या का 17.17 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। इनमें चीन, अमरीका, रूस, कनाडा, आस्ट्रेलिया जैसे विकसित देश भी शामिल हैं। वस्तुतः इस विश्व को, संस्कृत या हिंदी अंक प्रणाली देने वाला देश भी हमारा भारत ही है। अतः यह विश्व हमारा ऋणी है। प्रतिवर्ष अंग्रेजी के ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में हिंदी के अनेक शब्द जुड़ रहे हैं। भारत के अलावा विश्व के कुछ देशों तथा विश्व बैंक की वेबसाइट हिंदी में देखने को मिल रही है। इसके साथ–साथ 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी उत्सव', 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' (21 फरवरी) आयोजित किए जाते हैं। अब तो 11 फरवरी, 2008 से मॉरिशस में 'विश्व हिंदी सचिवालय' भी स्थापित हो चुका है। भारत के बाहर, हिंदी फिल्मों एवं धारावाहिकों/टी.वी. चैनलों की लोकप्रियता जग–जाहिर है। आज पाकिस्तान, नेपाल, अफगानिस्तान, फिजी, गुयाना, त्रिनिदाद आदि देशों में हिंदी की तूती बोलती है।

उपर्युक्त उपलब्धियां हमें हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर अग्रसर करती हैं। हमें देश के तथाकथित अंग्रेजी दां लोगों से सावधान रहते हुए सरकारी प्रयासों के साथ–साथ व्यक्तिगत स्तर पर दैनंदिन कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना होगा। 'विश्व हिंदी दिवस' केवल एक दिन का अयोजन बनकर न रह जाए अपितु प्रत्येक दिन हमारे लिए वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत पर आधारित विश्व में हिंदी के प्रसार करने के प्रण का दिन होना चाहिए।

भाषा पुस्तकों के या ज्ञान के ही काम आती है आम आदमी के पास जाते ही बोलने या समझने तक ही सीमित रह पाती है। बोल सकें – समझ सकें वही तो भाषा कहलाती है। हिंदी भाषा अपनी सरलता से ये काम बड़ी सहजता से कर पाती है। ऐसी प्रशासनिक भाषा जिसे इस्तेमाल करने पर लगे "इससे तो अंग्रेजी ही अच्छी" हमें हिंदी से और दूर भगाती है। हिंदी अपनी औपचारिकता से बाहर आएगी तो बदलती रहेगी, स्वतः बहती रहेगी...

भाषा कारखाने में नहीं बनती। यह व्यवहार और बोलचाल से ही आगे बढ़ेगी। ऐसी भाषा जो बच्चे–बच्चे को समझ में आएगी वही हिंदी राज–भाषा कहलाएगी। एक दिन रूदन मचाने से कुछ नहीं होगा हिंदी इतनी समृद्ध है कि इसे फैलने से कोई ताकत नहीं रोक पाएगी।

आँख से छलका आँसू

उमाशंकर मिश्र
सहायक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

प्यार किसी अफसाने का आधार होता है। उजड़े हुए चमन/टूटे हुए रास्ते/उदास बादल/निस्तब्ध रातें/उदासियों से सराबोर पक्षी/रोता हुआ आसमान, आज कुछ कहना चाहता था। प्रकृति से उन्हें प्यार नहीं, वो तो प्यार को व्यापार बना चुके हैं।

सूखती हुई नदियों को देखकर वो रोने लगा। आँख से आँसू छलक पड़े, क्या करूं। इन इंसानों को कैसे समझाऊं कि इनका व्यवसाय तो नदियों पर ही आश्रित है। लेकिन ये नदियों/घाटियों को साफ करने में अपना अपमान समझते हैं। दुनिया में कोई भी कार्य महत्त्वहीन नहीं होता है। हर व्यक्ति का एक विशिष्ट स्थान होता है। शर्त यह है कि ये अपने आप को समझाए/समझे/ पहचाने। उसकी आँखों से आँसू पुनः आ गिरे। आँचल में प्यार होता है और प्यार में आँसू।

शंकर पीपल के पेड़ के नीचे उदास बैठ गया। आज कोई काम भी नहीं करूंगा। बहुत होगा तो आज उपवास हो जाएगा। क्या चिकित्सक बेवकूफ है जो उपवास करने की नसीहत देते हैं। नीचे की घाटी में आज परिन्दे भी एक जगह एकत्र थे। प्रतीत होता था कि वो भी किसी व्रत के कारण आज उपवास ही करेंगे। माफियाओं की टीम इन्हें मारने के लिए सक्रिय रहती है। प्रकृति के संरक्षण के लिए अनेक कानून बने लेकिन ये कागजों में सिमट कर रह जाते हैं। सिमटे हुए ये कानून आम जनता तक आ ही नहीं पाते हैं। केवल पांच वर्षों में बड़े–बड़े भाषण होते हैं। जब वोटिंग हो जाती है तो महंगाई बढ़ती है। प्यार नफरत में परिवर्तित हो जाता है और अन्ततोगत्वा जनता नेताओं के बीच की दूरियां अपने–आप बढ़ जाती है। अगले चुनाव तक पुनः वह नेता किसी चैनल/ समाचार–पत्र में अपना फोटो छपवा कर कुछ वाह–वाही लूट कर जनता को कुछ संदेश बता देते हैं। ये कैसे छपता है, शंकर खूब जानता है। दान से तो धर्म होता है, इस देश में। यानी पैसे की शक्ति और इससे जुड़े हुए चैनल की भक्ति वह जानता था।

कुछ रोने की आवाज पहाड़ के नीचे वाली चट्टान से आ रही थी। शंकर चौंका.....और तेजी से उस ओर भागा। पक्षी वहीं एकत्र थे। शायद इंसान से अधिक पक्षी चेतनयुक्त होते हैं। एक बदहवास युवती रो रही थी। बहन क्या हुआ? मेरे साथ.....आँख के आँसू तो पूरी कहानी को जग बयां कर रहे हैं.....तो

पूछने की क्या जरूरत। शंकर समझ गया, शायद पक्षी इसीलिए एक जगह एकत्रित थे और उदास थे।

माता सीता की सुरक्षा में घायल जटायू शायद ऐसे ही उदास रहा होगा, जिसे भगवान राम ने अपनी गोद में उठा लिया था।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में इलाज हुआ। युवती स्वस्थ हुई। अज्ञात बलात्कारियों के खिलाफ केस भी दर्ज हुआ।

अगले दिन जंगल की पुरानी सूखी हुई लकड़ियों को इकट्ठा करने के लिए शंकर जंगल के नीचे की पहाड़ी की ओर गया। कुछ बदबू आ रही थी। एक दो आदिवासी इधर–उधर सूखी लकड़ियों को काट रहे थे। शंकर ने बदबू के बारे में पूछा तो आश्चर्य में पड़ गया। भइया शंकर कल हम लोग जब लकड़ी लेने आए तो एक युवती रो रही थी। एक को सारे पक्षी अपनी चोंच से मार रहे थे। वह बेहोश हो गया तो हम लोग पुलिस–प्रपंच से भाग खड़े हुए। शायद वह मर भी गया होगा। ये लोग कौन थे, हम लोगों को नहीं मालूम। शंकर सब कुछ समझ गया। पहाड़ों में जिंदगी के 50 वर्ष बिताए थे। पहाड़/पेड़/पौधे/पानी यानी सूखती नदियों/जलाशय भरने और व्यापक आसमान में उड़ान भरने वाले पक्षियों के बारे में वह इतना जानता था जितना इनके लिए वेतन लेने वाले नहीं जानते थे।

पुलिस ने लाश का पोस्टमार्टम कराया। लाश की शिनाख्त एक बेदर्द गुंडे के रूप में हुई, जिसे पुलिस 10 सालों से खोज रही थी और पांच हजार का इनाम भी उसके ऊपर था। जो पुलिस नहीं कर पाई वो पक्षी कर चुके थे। पोस्टमार्टम में साबित हुआ कि कुछ पक्षियों की चोंच में जहर भी होता है। उसकी चोंच के घाव से ही उस गुंडे की मौत हुई थी।

पक्षियों के संरक्षण के लिए आज भी शंकर और उस युवती को पहाड़ी में भटकते हुए देखा जा सकता था। शरणागत वहीं जाता है, जहां शरण मिलने के लिए उम्मीदें होती हैं। झुंड के झुंड पक्षी आज भी शंकर के आसपास आकर बैठते हैं। अपनी कमाई का अधिकांश भाग वह युवती और शंकर पक्षियों पर खर्च करते हैं। चहचहाते हुए पक्षियों को देखकर शंकर और युवती की आँखों से कुछ आँसू छलक पड़ते हैं। शायद ये खुशी के होते होंगे।

श्रद्धांजलि

साक्षी कत्याल
सहायक
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

देश की रक्षा करने हेतु देश की सरहदों पर तैनात
सेना के जवानों को
हमारा शत–शत प्रणाम।

देश की रक्षा करते हुए पठानकोट में शहीद हुए
हमारे फौजी भाइयों को हमारी श्रद्धांजलि।

लहू देकर तिरंगे की बुलंदी को संवारा है
फरिश्ते हो तुम वक्त के, तुम्हें सजदा हमारा है।

उन आँखों की दो बूँदों से समन्दर भी हारे होंगे
जब मेहंदी वाले हाथों ने मंगलसूत्र उतारे होंगे।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय में हिंदी दिवस समारोह, वर्ष 2015 – संक्षिप्त रिपोर्ट

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय, नई दिल्ली में 14 सितम्बर, 2015 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। निगम के महानिदेशक श्री दीपक कुमार, भा.प्र.से. ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती ज्योत्स्ना वरुण, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक तथा श्रीमती राखी सैनी, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी ने मंच संचालन किया।

सर्वप्रथम समारोह के अध्यक्ष श्री दीपक कुमार और मंचस्थ अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया गया। सरस्वती वंदना के पश्चात् श्री उपेन्द्र शर्मा, निदेशक (राजभाषा प्रभारी) एवं अन्य अधिकारियों ने मंचस्थ अधिकारियों का पुष्प–गुच्छ से स्वागत किया। श्री श्याम सुंदर कथूरिया, उप निदेशक (राजभाषा) ने वर्ष 2014–15 की वार्षिक हिंदी रिपोर्ट पढ़ते हुए उपस्थित जनों को राजभाषा शाखा द्वारा किए गए कार्यों एवं अर्जित उपलब्धियों से अवगत कराया। श्री यू. वेंकटेश्वरलू, वित्त आयुक्त ने हिंदी का महत्त्व बताते हुए अपना कार्यालयी कार्य राजभाषा हिंदी में करने पर जोर दिया। महानिदेशक महोदय ने अपने संक्षिप्त संबोधन में आग्रह किया कि हमें सरल और सहज हिंदी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। हिंदी की वार्षिक रिपोर्ट पर विशेष टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि मुख्यालय की राजभाषा शाखा अनेक गतिविधियां कर रही है, अन्य सभी शाखाओं को भी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करना चाहिए।

तत्पश्चात् समारोह में वाद्ययंत्रों की धुनों के साथ ताल मिलाते हुए निगम कर्मचारियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। महानिदेशक एवं मंचासीन अधिकारियों ने अपने कर–कमलों से निगम मुख्यालय की हिंदी गृह पत्रिका **"पंचदीप भारती"** के दसवें अंक का लोकार्पण किया।

इसके बाद मंचासीन अधिकारियों ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं, मूल हिंदी टिप्पण–आलेखन प्रतियोगिता और केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् की प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। समारोह के अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

निगम मुख्यालय में हिन्दी दिवस समारोह

निगम इकाइयों में

उप क्षेत्रीय कार्यालय, गुड़गांव

आदर्श अस्पताल, जयपुर

उप क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्लम

उप क्षेत्रीय कार्यालय, वडोदरा

उप क्षेत्रीय कार्यालय, एरणाकुलम

हिन्दी दिवस समारोह

उप क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर

उप क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुनेलवेली

उप क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाडा

उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत

जीवन

गगन मेहता
निजी सचिव
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

जीवन कैसा है, क्यों है, लिखना बहुत कठिन है
क्योंकि जीवन के रंग विभिन्न हैं
जीवन सुरों का, रंगों का मेल है
जीवन भावों का मेल है
जिसमें सीखने को बहुत कुछ मिलता है
जीवन में केवल कमल ही नहीं
कांटों भरा गुलाब भी खिलता है।

जीवन पतझड़ भी है, बसंत भी है
जीवन उदय भी है, अंत भी है
जीवन एक सुनहरा स्वप्न भी है
जीवन में मनुष्य लगाता है आशाओं का वृक्ष
और माली की तरह सींचता भी है उन्हें।

इसी तरह जीवन चलता रहता है, जुड़ा रहता है
बचपन, जवानी और बुढ़ापे की अवस्थाओं से
जब सांस निकलती है, तभी छूट पाता है
इंसान इस जंजाल से
जीवन भी क्या जीवन है।

जीवन दुष्कर्म करता है, कभी सत्कर्म करता है
कभी पाप करता है, कभी पुण्य करता है
कभी न्याय करता है, कभी अन्याय करता है
कभी स्वयं करता है, कभी औरों से कराता है
किसी न किसी तरह अपने जीवन से संलग्न रहता है।

मानव जीवन भी कठोर तपस्या है, साधना है
दुःख-सुख से बनी एक अराधना है
हे मानव तू सत्कर्म किए जा
कुछ दिनों का ये मेला है, क्या तेरा या मेरा है।

सभी तो ईश्वर का ही खेला है
सभी तो ईश्वर की ही रचना है
सभी तो ईश्वर की ही लीला है
कौन कब तक रहेगा, किसने जाना है
उसी की अराधना किए जा, यही मैंने माना है।

कद और हद

भूप सिंह यादव
अर्थ मंत्री
केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद्

अरे! भावी समाज के प्रहरी होश में आओ
क्यों दहेज के जाल में फँस रहे हो,
गर्भ भ्रूण हत्या करके कन्याओं को मत मरवाओ,

अब समाज को कलंकित करोगे कितना,
वधू की हाइट के मकड़ जाल में फँसों न इतना,
नैतिकता, योग्यता, संस्कार की हाइट देखो
या दहेज, प्रताड़ना, डाइवोर्स केस की बाट देखो।

अरे! समाज के कर्णधारो, क्या तुमसे यही है अपेक्षा,
योग्य कन्याओं की क्यों कर रहे हो उपेक्षा,
कद के हिसाब से ऊँट और शेर की पहचान करो,
क्या हैं? इनके गुण, धर्म, कर्म, इसका ज्ञान करो,
लाल, बाल, पाल के कद का ध्यान करो,
ये कैसे बने महान इसका ख्याल करो,
क्या चल रही है समय की नब्ज,
इसका भान करो,
ईश्वर का सबके हृदय में वास
ऐसा अनुसंधान करो।
समय माफ नहीं करेगा, न इंतजार करेगा,
आखिर पछतावे का बोझ भरना ही पड़ेगा,
क्या कन्या गाय की तरह है,
सोचो क्यों कसाई के घर बाँधते हो,
इन समाज के दुश्मनों को पहचानो,
क्या गुमराह होकर लालची के घर समा बाँधते हो।

न रहेंगे ये बेफजूली के टेंट हाउस,
न बचेंगे ये बर्बादी के फार्म हाउस,
सिवाय पछतावे के लौटेंगे हम,
खाली हाथ अपने हाउस,
ज़रा हकीकत और औकात पर आओ,
अरे! भावी समाज के युवा प्रहरी
ज़रा होश में आओ.....।

इस समाज की बिगड़ती हालत पर कुछ रहम खाओ
इस कहराती बेबसी, मानवता पर तरस खाओ,
समाज के दिलों की धधकती,
शोले की आग में ज़रा मरहम लगाओ,
समय की पुकार है, कद और हद का भेद मिटाओ,
गगन के मीठे स्वप्नों से धरातल पर आओ।
सोच लो, समझ लो, कितने बीतेंगे दिन–रात,
पता नहीं किस जन्म में होगी मुलाकात,
परिवर्तन होगा, जायेगी एक दिन ये उमस,
तब आयेगी परिवर्तन की मूसलाधार बरसात,
तब होगा मेरे समाज में शुभ प्रभात,
जाने कितनी ललनाओ की लौट जाती है खाली बारात,
क्योंकि गरीब माँ–बाप न लुटा पाते हैं दहेज की खैरात,
मूक दर्शक बनकर झेल रही है सभ्य समाज की जमात,
इसलिए आज हो रही है भयंकर वारदात।

सुविधाओं का जंजाल

राज कुमार
पूर्व कनिष्क हिंदी अनुवादक
क.रा.बी. निगम, क्षे.का. तृश्शूर

कला, संस्कृति एवं सभ्यता का विकास आज चरम शिखर पर है। भौतिकवादी दौड़ में हर व्यक्ति इस कोशिश में लगा है कि मेरे पास सुविधाओं की अत्यधिक मात्रा हो, ये सुविधाएं उसे शारीरिक संतोष तो देती हैं, परंतु विडम्बना यह है कि ये सब उसे उतने ही मानसिक असंतोष में भी डाल देती हैं। उसके मन में सर्वदा एक बुभुक्षा जोर मारती रहती है कि वह अपने पड़ोस एवं समाज में भिन्न दिखे। भौतिक उपलब्धियां निरंतर उसे वैचारिक दिवालियेपन की ओर ले जा रही हैं, जहां उससे अहंकार एवं ममकार की भावना घर करती जा रही है, शरीर को अत्यधिक आराम मिलने से उसका मस्तिष्क भी संघर्ष करने की स्थिति में नहीं रहता। वह रुकावटें नहीं झेल सकता, समस्याओं का सामना करने से कतराता है, हर राय उसे पैसे के पीछे चलने वाली नजर आती है। जबकि यह सनातन सत्य है कि माँ सरस्वती का लक्ष्मी जी से बैर है, सरस्वती त्याग, तपस्या और बलिदान की छांह में रमण करती हैं, लेकिन लक्ष्मी का संग्रह उपरोक्त धर्म के अंतर्गत नहीं हो सकता। मानव को यदि हम एक यंत्र मान लें तो यंत्र को सुविधापूर्ण ढंग से सोचने, क्रियात्मक विचार लाने के लिए समस्याओं, कठिनाइयों से धैर्यपूर्वक संघर्ष रूपी स्नेह देना आवश्यक है। परंतु जब यह यंत्र आराम–तलबी के मकड़जाल में फंस जाता है, तो इसकी क्रियाशीलता समाप्त–सी हो जाती है। क्रियात्मक मस्तिष्क के लिए संघर्ष की क्षमता अनिवाय शर्त है। जुझारू मानसिकता का होना आवश्यक है, तभी व्यक्ति का मस्तिष्क नई राह निकालेगा, नवीन आयाम एवं उत्तम विचारों के प्रति क्रियाशील हो सकेगा, अन्यथा वह मात्र सुविधाओं को भोगने वाला एक निष्क्रिय मांसपिण्ड बन कर रह जायेगा। सम्प्रति समाज में जो सुविधाएं एकत्र करने की होड़ लगी है, वह एक दिन उसे वैचारिक पतन के गर्त की ओर ले जायेगी। आज का बच्चा जब जन्म लेता है तो अधिकांश माता–पिता यह चाहते हैं कि स्तरानुसार उसे कोई अभाव न खले। फलतः जीवन के सच से उसका साक्षात्कार नहीं होता। जीवन में उसने कष्ट नहीं देखा। माता–पिता ने उसे सुविधाओं के झूले में झुलाया। परंतु भविष्य में ये सारी सुविधाएं पाने के लिए और समाज में अपना एक सम्मानित स्तर बनाने के लिए उसे कठिन संघर्ष करना पड़ेगा। इसलिए माता–पिता बच्चों को सुविधाओं के दलदल में डूबा हुआ कीड़ा न बनने दें। बिना तपाये सोना भी आकार ग्रहण नहीं करता। राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा है – "उड़ते जो झंझावतों में, पीते जो, वारि प्रपातों में, सारा आकाश अयन जिसका, विषधर भुजंग भोजन जिसका वे ही फणिबंध छुड़ाते हैं, धरती का हृदय जुड़ाते हैं।"

संघर्ष का सामना करना, परिस्थितियों से अनुकूलता स्थापित करना बच्चों को सिखया जाए। विपरीत परिस्थितियों में भी कैसे प्रसन्न रहकर कार्य किया जाय? यह भी एक कला है। यह कला भी बच्चों में आनी चाहिए। सामान्यतः देखा जाता है कि माता–पिता जब तक जीवित रहे, बच्चे ने सुविधाएं भोगी, भविष्य के प्रति सचेत होने की तथा स्वावलंबी बनने की आवश्यकता उसने नहीं समझी, उनके मरणोपरांत एकाएक जब समस्याएं मुंह बाये उसकी और दौड़ती हैं तो वह भयाक्रांत होकर चारों खाने चित्त हो जाता है; और तब शुरू होता है कुंठाओं और पतन का दौर।

निष्कर्षतः कहना यह है कि "अग्रसोची सदा सुखी" – यदि हम चाहते हैं कि भावी पीढ़ी सुरक्षित और स्वावलंबी हो, उसके द्वारा नवीन अन्वेषण हो तो उसे स्वअर्जन और स्वपोषण की भाषा पढ़ानी होगी, तभी प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा। अन्यथा विरासतों को बेच खाने के अलावा और कोई जीने का मार्ग नहीं है।

विविधता का फायदा

अमेरिकी हेल्थ मैगजीन 'स्ट्रोक' में प्रकाशित एक ताजा स्टडी ने भाषाओं के ज्ञान से जुड़ा एक दिलचस्प फायदा खोज निकाला है। ब्रिटिश और भारतीय डॉक्टरों द्वारा की गई यह स्टडी बताती है कि ब्रेन स्ट्रोक से उबरने में उन लोगों को आसानी होती है जो एक से अधिक भाषाएं जानते हैं। इन डॉक्टरों ने भारत के 608 ऐसे मरीजों की केस स्टडी की, जो 2006 से 2013 के बीच ब्रेन स्ट्रोक का शिकार हुए थे। इनमें आधे ऐसे थे जो दो या अधिक भाषाएं जानते थे। स्टडी रिपोर्ट के मुताबिक द्विभाषी मरीजों में 40 प्रतिशत ने सामान्य बोधात्मक क्षमता (जनरल कॉग्निटिव फंक्शंस) दोबारा हासिल कर ली, जबकि एक भाषाभाषी मरीजों में यह प्रतिशत 20 ही रहा।

चिकित्सा विज्ञान की यह खोज कई लिहाज से अहम है। भाषाओं का ज्ञान हमारे लिए हमेशा से महत्त्वपूर्ण रहा है। माना जाता है कि कोई भी भाषा सीखना दुनिया देखने के लिए एक नई खिड़की खोलने जैसा है। हर नई भाषा के साथ एक पूरी सभ्यता, एक संस्कृति, एक अलग दुनिया हमारे सामने खुलती चली जाती है। इससे न केवल हमारा भाव संसार विकसित होता है बल्कि हमारे दुनियावी ज्ञान में भी खासी बढ़ोतरी होती है। मगर, इन सबसे अलग अब यह पता चल रहा है कि हमारा अतिरिक्त भाषा ज्ञान, हमारी दिमागी संरचना को भी प्रभावित करता है। अगर आज की आईटी शब्दावली का इस्तेमाल किया जाए तो हमारे दिमागी कम्प्यूटर का सॉफ्टवेयर उसके हार्डवेयर को भी प्रभावित करता है। सामान्य कम्प्यूटरों के साथ ऐसा बिल्कुल नहीं होता। वहां खतरनाक से खतरनाक वायरस भी कम्प्यूटर के हार्डवेयर का कुछ नहीं बिगाड़ पाता। ज़ाहिर है, इंसानी दिमाग के बारे में यह एकदम अनूठी जानकारी है। अपने चारों ओर कई तरह की संस्कृति और जीवनशैलियां देखना निश्चय ही हमें मानसिक रूप से ज्यादा समृद्ध बनाता है। लेकिन हमें सोचना होगा कि क्या विविधता हमारे लिए भौतिक दृष्टि से भी उपयोगी है? जो लोग अपनी संस्कृति या भाषा की श्रेष्ठता को लेकर तैयार किए गए विमर्श को दूसरों पर लादने की कोशिश में लगे हैं, वे भी अगर चाहें तो इस खोज से कुछ फायदा उठा सकते हैं। अपनी 'सर्वश्रेष्ठ' भाषा–संस्कृति के फंदे में फंसकर बुढ़ापे में अल्जाइमर का शिकार होने से तो अच्छा यही है कि अपनी ऊर्जा दुनिया की भिन्नताओं को सीखने–समझने में लगाई जाए।

नवभारत टाइम्स से साभार

प्राचीन भारतीय विज्ञान और प्रख्यात वैज्ञानिक

सुश्रुत संहिता में 1120 बीमारियों, 700 औषधीय वनस्पतियों के बारे में बताया गया है। साथ ही खनिजों अथवा लवणों से बनने वाले 64 और जीव–जन्तुओं से मिलने वाली 57 दवाओं का वर्णन है। इसमें अनेक प्रकार की जटिल शल्य चिकित्सा, भ्रूण विकास, अस्थि, मस्तिष्क आदि के बारे में विस्तार से बताया गया है। आंखों की बीमारियों के बारे में और मोतियाबिन्द की शल्य चिकित्सा का भी वर्णन है। हृतशूल के नाम से एनजाइना, पेक्टोरिस, मधुमेह, रक्त संचरण तंत्र, उच्च रक्तचाप, कुष्ठरोग, पथरी आदि की व्याख्या और इलाज बताया गया। प्लास्टिक सर्जरी का भी वर्णन मिलता है। सुश्रुत संहिता का 8वीं शताब्दी में किताब–ए–सुश्रुत नाम से अरबी में भाषान्तर हुआ। यहां से यह ज्ञान इटली होते हुए यूरोप पहुंचा। 1764 में लंदन की जेंटलमैन्स मैगजीन में कुमार वैद्य नामक भारतीय की नाक का पुनर्निर्माण (प्लास्टिक सर्जरी) विषय पर रिपोर्ट छपी। आज से 200 साल पहले ब्रिटिश सर्जन जोसेफ कॉन्स्टेनटाइन कार्प ने 20 वर्षों तक भारतीय प्लास्टिक सर्जरी का अध्ययन किया और 1815 में पश्चिमी जगत की पहली प्लास्टिक सर्जरी की। औजार वही थे, जो सुश्रुत संहिता में बतलाए गए थे। टीपू सुल्तान और ब्रिटिश फौज के बीच 1762 में हुई मैसूर की लड़ाई में टीपू सुल्तान द्वारा बंधकों के नाक और हाथ काटने का वर्णन आता है। बाद में भारतीय वैद्यों ने उनमें से अनेक की नाक का पुनर्निर्माण कर दिया। भारतीय गणितज्ञों माधव, नीलकंठ और ज्येष्टदेव के कार्य का लाभ यूरोपीय गणितज्ञों ने उठाया। परन्तु किसी ने भारत के इस योगदान का अध्ययन करने का प्रयास नहीं किया।

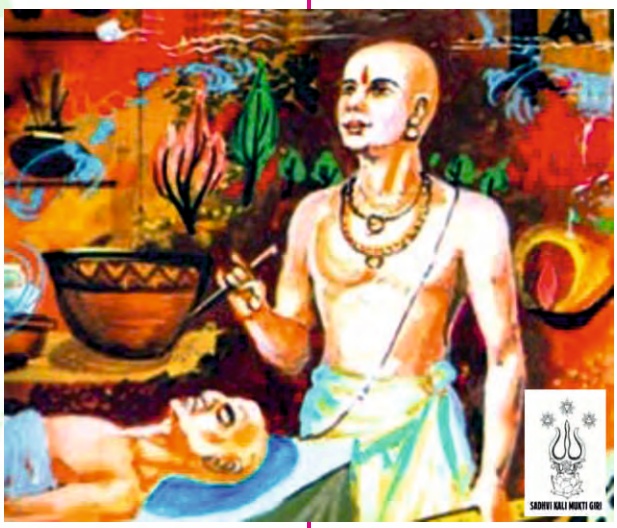

ऋषि भारद्वाज :– राइट बंधुओं से 2500 वर्ष पूर्व वायुयान की खोज भारद्वाज ऋषि ने कर ली थी। पुष्पक विमान का उल्लेख इस बात का प्रमाण है। ऋषि भारद्वाज ने 600 ईसा पूर्व इस पर एक विस्तृत शास्त्र लिखा था, जिसे विमान शास्त्र के नाम से जाना जाता है।

ऋषि बोधायन :– बोधायन भारत के प्राचीन गणितज्ञ और शुल्ब सूत्र तथा श्रौतसूत्र के रचयिता हैं। पाइथगोरस के सिद्धांत से पूर्व ही बोधायन ने ज्यामिती के सूत्र रचे थे। उन्होंने 2800 वर्ष पूर्व रेखागणित (ज्यामित) के महत्त्वपूर्ण नियमों की खोज की थी।

ऋषि आर्यभट्ट :– पांचवीं शताब्दी में पैदा हुए आर्यभट्ट ने गति, तारामंडल ज्योतिष विज्ञान में अनेक खोजें की।

ऋषि ब्रह्मगुप्त :– ब्रह्मगुप्त सिद्धान्तिका लिखी, शून्य व ऋणात्मक संख्या का आविष्कार किया। अरब विश्व ने इनके ज्ञान से अत्यधिक लाभ उठाया और अपनी सभ्यता का विकास किया।

ऋषि भास्कराचार्य :– 12वीं शताब्दी के महान गणितज्ञ व तारामंडल वैज्ञानिक थे भास्कराचार्य, जिन्होंने लीलावती बीजगणित तथा तारामंडल विज्ञान पर अनेक अमर खोजें कीं।

जैन संत महावीराचार्य :– जैन साहित्य में जैन संत चतुर्भुज त्रिगुण के बारे में अनेक व्याख्याएं देते हैं। सन् 850 में जैन संत महावीराचार्य ने गणित सार संहिता लिखकर दुनिया को गणित के साथ–साथ विज्ञान की नई रोशनी से परिचित करवाया।

ऋषि वराहमिहिर :– गुप्त काल में महान वैज्ञानिक हुए जिन्होंने जीव विज्ञान, भू–विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान पर अनेक खोजें कीं। पूरी दुनिया उन पर गर्व करती है।

ऋषि नागार्जुन :– दसवीं शताब्दी में पैदा हुए ऋषि नागार्जुन ने धातु विज्ञान में बहुत से आविष्कार किए। स्वर्णाभूषण निर्माण को लेकर उनकी तकनीकें आज भी प्रयोग में लाई जाती हैं।

ऋषि सुश्रुत :– सुश्रुत संहिता में उन्होंने चिकित्सा विज्ञान, मानव चिकित्सा विज्ञान व जीव चिकित्सा विज्ञान के बारे में अप्रत्याशित खोजें कीं। उन्हें विश्व का प्रथम ज्ञात शल्य चिकित्सक होने का गौरव प्राप्त है।

ऋषि चरक :– सम्राट कनिष्क के राजवैद्य चरक चिकित्सा विज्ञान में अत्यंत धनी थे। आनुवंशिक रोगों की चिकित्सा व रोग चिकित्सा में उनका नाम पूरी दुनिया में सम्मान से लिया जाता है।

ऋषि पतंजलि :– महर्षि पतंजलि ने विश्व को लिखित रूप से योग का ज्ञान दिया जिसमें मानव इहलोक में सुखमय जीवन जीते हुए मोक्ष तक की प्राप्ति कर सकता है। योग का लोहा आज पूरी दुनिया मान रही है।

साभार : सनातन वाणी पत्रिका

अनमोल वचन

मधु कौशिक
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

1. आत्म–विश्वास से हर कठिन कार्य किया जा सकता है।
2. सदैव ईश्वर की स्तुति करनी चाहिए।
3. अनुभव एक ज्योति के समान है, जो हमें उन्नति का मार्ग दिखलाता है।
4. पानी से नहाने पर सिर्फ शरीर का मैल साफ होता है, मन के पाप नहीं।
5. जिसके मन में संतोष नहीं होता, वह अमीर होने पर भी संतुष्ट नहीं होता।
6. मनुष्य को वृक्ष से शिक्षा लेनी चाहिए, जो पत्थर खाने पर भी फल देता है।
7. मनुष्य को प्रत्येक कार्य धैर्यपूर्वक करना चाहिए, धैर्य का फल मीठा होता है।
8. दिल का हिसाब शब्दों में नहीं किया जाता, कीमत गिर जाती है।
9. संसार में कुछ बनना चाहते हो तो यह सोचना छोड़ दो कि मैं भाग्यहीन हूँ।
10. जो पराजय को भी हँस कर स्वीकार करे, वही सच्चा विजेता है।
11. एक ही पत्थर से दो बार ठोकर खाना गलती है।
12. यह बात कुछ महत्त्व नहीं रखती है कि आदमी कैसे मरता है, बल्कि महत्त्व इस बात का है कि वह कैसे जीता है।

रंगीला रे, तेरे रंग में .... यूं रंगा है

क्षेत्रपाल शर्मा
पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

"मुस्कान में 'महक' होती है,
उम्मीदों के 'पंख' होते हैं।
'चलनी में धार' काढ़ने वाले,
जनम–दर–जनम रोते हैं।।"

सच बताइए, क्या आप रात में हरसिंगार के पौधे के नीचे से गुजरे हैं? सुबह–सुबह घास पर ठहरी हुई ओस की बूँदें देखी हैं? झरने की कल–कल सुनी है? पंकज उधास को गाते हुए सुना है?

ऐसे अवसर भाग्य वालों को ही नसीब होते हैं। ललित कलाओं से युक्त एवं असंपृक्त दोनों ही खुशनसीब होते हैं। राबर्ट ब्राउनिंग ने ठीक ही कहा था : "गॉड इज़ दि परफेक्ट पोयट, हू इन हिज़ पर्सन एक्ट्स हिज़ ओन क्रिएशन्स"। "प्रेम पुजारी" फिल्म का यह गीत कभी आपने सुना है :–

"रंगीला रे, तेरे रंग में, यूँ रंगा है, मेरा मन
छलिया रे, ना बुझे है किसी जल से ये अगन
पलकों के झूले से, सपनों की डोरी
प्यार ने बांधी जो, तूने वह तोड़ी
खेल ये कैसा रे, कैसा रे साथी
दीया तो झूमे है, रोये है बाती
कहीं भी जाए रे, रोये या गाये रे, चैन न पाए रे
हिया, वाह रे....."

अंग्रेजी कवि शेली की यह पंक्ति :

"अवर स्वीटेस्ट सौंग्स आर दोज़ दैट टैल अवर सैडेस्ट लव" ..... या

"वियोगी होगा, पहला कवि। (जयशंकर प्रसाद)

ये ललित कलाएँ ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा हैं। सूरज से एक दीपक का यह वार्तालाप कि "जब तक मुझ में आपके प्यार का तेल है और स्नेह की बाती है, मैं अंधेरे से आखिरी दम तक लड़ता रहूंगा।" इनका हर हाल में सम्मान किया जाना चाहिए। ये अजर–अमर हैं। जैसे यह श्लोक :–

"ऊँ पूर्ण मदः पूर्णनिदम् पूर्णात पूर्नमुदच्यते।"

यह भी पूर्ण है। इसमें से जो कुछ निकालो, वह भी पूर्ण है।

चार्ल्स डिकेन्स की 'ऐ टेल ऑफ टू सिटीज़' की ये पंक्तियां पढ़ें :–

The period : "It was the best of times, it was the worst of times, it was the age of wisdom, it was the age of foolishness, it was the epoch of belief, it was the epoch of incredulity, it was the season of light, it was the season of darkness, it was the spring of hope, it was the winter of despair, we had everything before us; we had nothing before us".

या फिर टेनीसन की "पैलेस ऑफ आर्ट।"

यह शेर पढ़ें :–

"इश्क को दिल में जगह दे नासिर,
इल्म से शायरी नहीं आती।"

सचमुच उस समय मेरी आँखे भर आती हैं, जब मेरे पास लोगों के पत्र अंग्रेजी में आते हैं । – महादेवी वर्मा

या कि,

रॉबर्ट ब्राउनिंग की कविताएं। यह अंश :–

"ग्रो ओल्ड एलॉन्ग विद मी,
दि बेस्ट इज़ येट टू बी...."

या ये :

"ए मिनिट्स सक्सेस पेज़ फेल्योर ऑफ मेनी ईयर्स।"

या गालिब का यह शेर :–

"हैं और भी दुनिया में सुखनवर,
कहते हैं कि गालिब का अंदाज़े बयां और।"

एस.टी. कोलरिज ने सटीक कहा कि 'गद्य' भाषा का निर्जीव रूप माना गया है, उत्तम क्रम में रखे गए शब्द 'पद्य' सजीव रूप है, (उत्तम क्रम में रखे उत्तम शब्द का चयन) भाषा में प्राण प्रतिष्ठा करना ही कविताई है। भाषा ही शायर की पहचान और संप्रेषणीयता सिद्ध करती है। काव्य में अंतर्निहित छंद विधाएँ क्या हैं, इस पर विचार करना और जानकारी रखना हर एक को जरूरी है।

साहित्य के विद्यार्थी एवं सामान्य पाठक भी जिस तरह छंद शास्त्र की जानकारी (पाद, वर्ण या मात्रा) रखते हैं, अंग्रेजी की काव्य–विधा की जानकारी मीटर, स्ट्राफे, ट्राकीज आयम्ब से होती है। काव्य की पंक्ति में सिलेबिल्स के क्रम को मीटर कहते है। इकाई इसमें सिलेबिल है। एक समय में सिलेबिल्स 2 या 3 के जोड़े में होते हैं। एक साथ मिले हुए 2 सिलेबिल्स को फुट कहते हैं। एक फुट को 'काउ' (cow) अब आयम्बिक पेन्टा मीटर को 5 सिलेबिल्स वाला छंद जान सकते हैं। यथा :–

da DUM/da DUM/da DUM/da DUM/da DUM/

टरसेट : tercet/terzarima :– तीन पंक्ति वाले पद्य–इकाई को कहते हैं। यथा aba, bcb, def (इसी तरह)

स्टेन्ज़ा : पद्य–पंक्ति जिसमें 2 या 2 से अधिक पंक्तियों का समूह इकाई हो, पद्य बड़ी है। यह कपलेट (2) टरसेट (3) क्वार्टरेन्स (4) की इकाई में भी हो सकती है। ये सिलेबिल्स एक्सेन्चुएटेड (घोष) या स्ट्रेस्ड (बलाघाती) या इसके विपरीत (अघोषी एवं अबलाघाती) भी हो सकते हैं।

वर्स : पद्य को कहते हैं।

ब्लेन्क वर्स : 5 वर्णों (सिलेबिल्स) में रची बिना लय वाली कविता, जो प्रायः प्रवाहमय होती है। Paradise Lost

फ्री वर्स : ऐसी पद्य/कविता जो लय हीन हो लेकिन इसमें एक ही तरह के अक्षर बार–बार ध्वनित होते हों। T.S. Eliot

एनापेस्ट : 2 सादे सिलेबिल एवं एक बलाघाती हो, जैसे – com pre HEND, in ter VENE

डेक्टिल : एनापेस्ट का विपरीत एक सादा एवं 2 बलाघाती

इमेजरी : वह पद्य जो हमारे 5 संवेदी अंगों को स्पंदित करता हो।

एलीगरी : नारीमन, पुरुषमन की अति कोमलतम भावनाओं का सरल एवं स्वाभाविक प्रस्फुटन, जैसा "मेघदूत" (कालिदास) में हुआ है, अन्यत्र कहीं नहीं।

काव्य साहित्य की एक अति संवेदनशील विधा है। ललित कलाएं तो सभी श्रेष्ठ हैं। साहित्य एवं संस्कृति ही देश की धड़कन होती हैं। भारत की परम्पराएँ एवं आदर्श परम उच्च रहे हैं। जर्मन विद्वान मेक्समूलर ने भारत को "संस्कृति का पालना" बताया था। साहित्य, कला एवं काव्य मनुष्य जीवन में स्पंदन करते हैं। इनके बिना "मनुष्य पशु – "मृगाश्चरन्ति" समान होता है। ग्रीक विद्वान अरस्तु ने यह कहा भी है कि, "मनुष्य एक राजनीतिक पशु है"। वैसे 'निक्की मोस्तुकी' ने एन इडियट्स गाइड टू रायिटिंग पोइट्री में काव्य की बारीकियाँ सरल तरीके से समझाई हैं।

यहाँ हम अंग्रेजी साहित्य एवं भाषा की काव्य विधाओं की ओर विमर्श करेंगे। जो इस प्रकार हैं :–

Lyric - short and non-narrative poem

Ode : (long lyric poem)

Sonnet : (a long poem usually of 14 lines with rhyming pairs)

Dramatic monologue : (speech of an individual)

(Browning : My Last Duchess)

Elegy : (formal lament on death of someone)

(In memoriam : Tennyson)

(Churchyard : Gray)

Epic : Large scale poem in length & topic.

Elevated style of Language (Milton's Paradise Lost)

Mock epic : makes use of epic conventions and shows topic is of great importance (Pope : Rape of the Lock)

A Ballad : is a song (originally orally) form of folk poetry (4 line stanza)

(ABCD quatrain)

सानेट : एक लय–बद्ध (छंद–बद्ध) गीत (14 पंक्ति का) आमतौर पर पंक्ति का abba abba, cde, cde समाप्ति क्रम होता है।

Allegory - A symbolic narrative in which the surface details imply a secondary meaning.

Blank Verse - un-rhyming a iambic pentameter also called (heroic verse)

Poem : verse

Couplet : a pair of successive rhyming lines usually of same length

Epigram : a witty and pithy saying

Epistle : A letter written to a close one

Free Verse : non metrical, non rhyming lines, closely following natural speech.

Metaphor : A comparison that is made without pointing out a similarity by using words such as like, as, etc.

Simile : All similes are metaphors but all metaphors are not similes. Similes are like as .....

Metaphor (my life is an open book).

(जमीन दाग की होगी हुआ करे लेकिन, हमारे शेर हैं, कहने का फन हमारा है।)

गद्य : भाषा का निर्जीव रूप, (उत्तम क्रम में रखे गए शब्द गद्य हैं)

अदब का संसार

पद्य : सानेट भाषा का सजीव रूप (उत्तम शब्द जो उत्तम क्रम से हो) भाषा में प्राण प्रतिष्ठा करना ही कठिनाई है। तो गद्य पर चार्ल्स डिकेन्स की tale of two cities की opening lines समझने के लिए पठनीय हैं। भाषा ही शायर की पहचान और सम्प्रेषणीयता सिद्ध करती है।

रूबाई : 4 सिलेबिल्स इकाई वाली पद्य–इकाई, जिसकी तीसरी पंक्ति अनराइम (तुक में न हो), यह रूबा का प्लूरल (बहुवचन) है। जैसे : उमर ख्य्याम

इलेजी (शोकगीत) : किसी प्रिय के निधन पर लिखा शोक गीत यथा–टामस ग्रे, मिमी खिलवती

आइरनी : (नाटक में, तब जब श्रोता किसी बात को जाने, लेकिन अभिनय करने वाला न जाने)

(परिस्थिति : तब जब क्या होना था और क्या हो गया, इसका तालमेल न हो)

(वाक् – जब वक्ता जो कहे उसका अर्थ प्रसंग के उलट हो।)

फौक–सोंग : लोक गीत जो देसी वाद्य यंत्रों एवं स्थानीय अवसरों पर गाए जाते हैं। नायक–नायिकाएं एवं अभिनय करने वाले भी आसपास के होते हैं।

ओड : एक लिरिकल गीत जो किसी एक वस्तु की प्रशंसा या संबोधन में हो। अनियमित लय में हो। Ode to Grecian urn, Ode to west wind. प्रकार – होरेसिअन, पिंडारिक और अनियमित।

बैलड : एक गीत जो कहानी पर आधारित एवं संगीतमय भी हो, जैसे कोलरिज़ की राइम ऑफ एंशिएंट मेरिनर, वर्ड्सवर्थ के लिरिकल बैलड्स

इपिक : महाकाव्य

इमेजरी : वह भाषा जो पांचों इन्द्रियों को अपील करे।

मोक–हीरोइक :

Humor हास्य

Satire ताना मारना,

Irony व्यंग्य

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में जनरल एजूकेशन सेंटर के प्रोफेसर जानी फास्टर, जो विश्वविख्यात गायक/कलाकार हैं, से एक कार्यक्रम में भेंट हुई तो उन्होंने "भ्रांतिमान अलंकार" के विषय में श्री मैथिलीशरण गुप्त के इस छंद का उल्लेख किया:–

"नाक का मोती अधर की कांति से,
बीज दाड़िम का समझकर भ्रांति से,
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य शुक यह कौन है।।"

वैसे आप चौंकिए मत, "इडियट्स गाइड टू राइटिंग पोइट्री" में काव्य–विधाओं की सोदाहरण व्याख्या की गई है लेकिन 'इडियट' शब्द से कन्फ्यूजन न हो। यह पुस्तक प्रो. निक्की मौस्तुकी ने लिखी है।

Elegy (इलेजी) – शोकगीत : ग्रे की लिखी 'इलेजी रिटन इन ए कंट्री चर्चयार्ड', एक श्रेष्ठ शोक गीत है। रूबाई इसका अरेबेक संस्करण है। प्रायः यह 4 पंक्तियों की पद्य–रचना होती है, जिसकी तीसरी पंक्ति अन्य पंक्तियों से लय में नहीं होती।

पेस्टोरल इलेजी, वह शोक गीत है जो कवि किसी मित्र/रिश्तेदार की मृत्यु पर दुःख व्यक्त करता है। इसके मुख्य तत्व ये हैं :–

(i) Invocation to muses

(ii) Shepherds Mourning

(iii) Nature's description

(iv) Digression

(v) Consolation

कविता के बारे में कवियों के विचार

Shakespeare : "The lunatics, the lovers and the poets....." A mid summer nights dream Act 5 scene 1 कवियों को कल्पना का धनी माना गया है। हिंदी में "जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि" लेकिन उर्दू में "इलटी चाल चलते हैं .... कहकर इशारा दिया है। एक विद्वान ने व्याकरण के लिए यह लिखकर कि यह प्रथम है, श्लोक लिख दिया, तो दूसरे ने "यथा शिखा मयूरानां ..... श्लोक लिखकर गणित की श्रेष्ठता गिना दी और अपने–अपने दर्शन को बढ़ा–चढ़ा कर बताने लगे, परंतु गिरिधर ने तेरह (तेरहवीं वाले नहीं) "सईं ये न विरुद्धिए गुरु पंडित कवि यार, बेता, वनिता, पौरिया ....."

Poets are unacknowledged legislators of the world. - *P.B. Shelley*

(A defense of poetry)

Poetry at bottom a criticism of life. - *Mathew Arnold.*

Spontaneous overflow of powerful feelings. - *Wordsworth.*

Immature poets imitate, mature poets steal. - *T.S. Eliot*

Milton was a genius, who could cut colossus from a rock but could not carve heads upon a cherry-stones. - *Samuel Johnson*

Poetry is the record of best and happiest moments of happiest and best minds. - *P.B. Shelley*

Poetry is not a turning loose of emotion, but an escape from emotion. - *T.S. Eliot*

ट्रेडीसन एंड इंडिविजुअल टेलेंट की इलियट की इस टिप्पणी ने काफी टीकाओं को जन्म दिया – आम्न्दा ए केम्प्बेल ने प्रश्न किया कि क्या कविता में इमोशन की कोई कीमत नहीं होती? अगर यही बात है तो रोमांटिक कवि इस हिसाब से फेल होते हैं –

इलियट के कहने का अर्थ था कि कविता जो प्रभाव पाठक पर छोड़ेगी उससे उसके कृतित्व का आकलन होगा न कि कवि के व्यक्तित्व और इमोशन से–

लेकिन डा जॉनसन ने लाइव्स ऑफ पोइट्स में इस इम्पर्सलिज्म को अस्वीकार किया है – "अल्पज्ञान भयंकरम्" की उक्ति कहने वाले अलेक्जेंडर पोप ने 'ऐसे ओन क्रिटिसिज्म' में कहा है कि आलोचक को सतर्क और विनम्र होना चाहिए – व्यर्थ आलोचना, व्यर्थ कविता से भी ज्यादा हानि करती है –

Idiom is an expression and the words have the meaning not literally but a hidden meaning i.e. Break a leg. Writing a poem is discovering. - *Robert Frost.*

हिंदी को बढ़ते देखा

कोमल सिंह
सहायक
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

हिंदी राष्ट्रभाषा है, भारत देश को अपनाते देखा,
राष्ट्र के धरातल पर हिंदी का विशेष स्थान देखा।

हिंदी का परचम लहराते देखा हिंदी का भाग्य बनते देखा,
हिंदी शब्दकोश जो देखा हिंदी का परिचय समझते देखा।

हिंदी का महत्त्व समझाते देखा हिंदी को बिन्दी लगाते देखा,
हिंदी को सजते संवरते देखा हिंदी का मान बढ़ाते देखा।

हिंदी को अपनाने हेतु उपहार प्रोत्साहन आदि देखा,
हिंदी के प्रति विभिन्न कार्यालयों–प्रतियोगिताओं का योगदान देखा।

हिंदी के बैनर तले हिंदी माह को मनते देखा,
पूरे जगत में हिंदी की पहचान बनते देखा।

बस काम ही काम

साक्षी कत्याल
सहायक
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

बस काम ही काम दिनभर काम
सुबह भी काम शाम भी काम
नहीं एक पल का भी आराम
नहीं एक पल का भी विश्राम
नहीं एक पल का भी सुकून
नहीं एक पल का भी चैन
बस काम ही काम.....

मशीनी युग में आदमी भी मशीन बन गया
मशीनों से काम करते–करते वो भी एक पुर्जा बन गया
इस काम के युग में बाकी न कोई अहसास रहा
एक–दूसरे पर बाकी न कोई विश्वास रहा
इस पुर्जे रूपी मानव को उदासी का है जंग बना
बस काम ही काम.....

उदास चेहरे मुरझाए से सपने लिए बढ़े
देखकर जिसे चुपके से खुशी के भी आँसू निकले
हर तरफ अफरा–तफरी का माहौल बना
कोई फरिश्ता और काल न कोई हमसफर रहा
बस काम ही काम.....

टेलीफोन व डोर बैल की घंटियों का दौर चला
हर तरफ दलालों का शोर चला
बनावटी हंसियों में संजीदगी मिली नहीं
जाने कब मातम का शोर मचा
पैसों वालों की तिजोरियों का बोलबाला हुआ
सच्चे और शरीफों का मुँह काला हुआ
बस काम ही काम.....

कामचोर को हर वक्त धिक्कारा गया
फटकार से कभी–कभी डराया भी गया
बचे जो काम से वो निक्कमा कहलाया
निक्कमा व नकारा कहकर उसे पुकारा गया
बस काम ही काम.....

कहाँ फुरसत कि पति–पत्नी दो घड़ी बैठें
कुछ कहें मन की एक–दूसरे से बाँटें
हर रिश्ता अब काम का हुआ
हर नाता अब काम का हुआ
यह युग कर्मयोगियों का युग कहलाया
इस युग ने इस युग को नया चोला पहनाया
बस काम ही काम.....

बाप और बेटे में दूरियाँ बढ़ीं
दोनों के रिश्तों में मजबूरियाँ बढ़ीं
बाप की मीठी जबान बेटे से सेवा करा गई
और बेटे की मीठी–मीठी बातें बाप की
जेब खाली करा गई
इस तोल–मोल के भाव में जहाँ – तहाँ फुर्सत गायब हुई
बस काम ही काम..... ।

भारत में प्रदूषण

मधु कौशिक
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

बहुत बढ़ गया है भाई भारत में प्रदूषण
चारों ओर फैला है जल, वायु, ध्वनि प्रदूषण
बच्चे, बूढ़े और सभी हो गए परेशान
दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है प्रदूषण की शान
भारत में जगह–जगह फैला है गंदा पानी
देख कर गंदगी, आ जाती है याद नानी
इसे साफ रखने के लिए कोई प्रबंध नहीं करता है
बल्कि इसे गंदा करने में हर कोई आगे रहता है
वायु भी नहीं बच पाई है इस विषैले प्रदूषण से
ये भी भरी पड़ी है, विषैले तत्वों से
पेड़ जो देते हैं हमें जीवन दायिनी हवा
फिर भी क्यों इंसान है इनसे खफा
पेड़ काट रहे हैं वनों में कई इंसान
यदि बढ़ता रहा प्रदूषण इसी रफ्तार से
तो इसमें शक नहीं कि मानव हो जाएगा
समाप्त इस संसार से
रोकनी होगी हमें इसकी बढ़ती रफ्तार
यदि बचाना है हमने अपना मानव संसार
होगा प्रदूषण समाप्त तभी
जब मिल कर गंदगी को मिटाएंगे सभी
फैलेगी हरियाली भारत में चारों ओर
खुशियों से झूमेगा हर इंसान
प्रयत्न सभी को करना है
भारत को संसार में आगे करना है
प्रयत्न सभी को करना है
भारत को प्रदूषण रहित करना है।

मनोवैज्ञानिक स्ट्रेस

रवीन्द्र
बहु कार्य स्टाफ
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

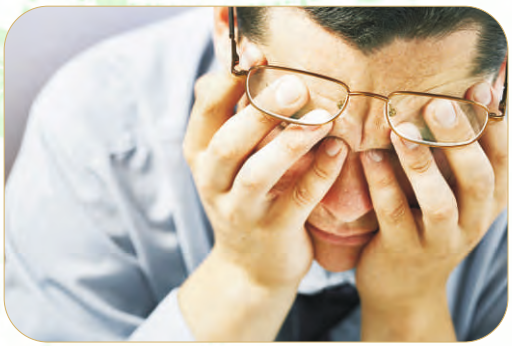

एक मनोवैज्ञानिक, 'स्ट्रेस मेनेजमेंट' के बारे में अपने दर्शकों से मुखातिब था.....
उसने पानी से भरा एक गिलास उठाया.....
सभी ने समझा कि अब "आधा खाली या आधा भरा है" यही पूछा और समझाया जाएगा.....
मगर मनोवैज्ञानिक ने पूछा.....कितना वजन होगा इस गिलास में भरे पानी का.....?
सभी ने.....300 से 400 ग्राम तक अंदाजा बताया.....
मनोवैज्ञानिक ने कहा.....कुछ भी वजन मान लो.....फर्क नहीं पड़ता.....
फर्क इस बात का पड़ता है.....कि मैं कितनी देर तक इसे उठाए रखता हूँ।
अगर मैं इस गिलास को एक मिनट तक उठाए रखता हूँ.....तो क्या होगा ? शायद कुछ भी नहीं.....
अगर मैं इस गिलास को एक घंटे तक उठाए रखता हूँ.....तो क्या होगा ?
मेरे हाथ में दर्द होने लगे.....और शायद अकड़ भी जाए।
अब अगर मैं इस गिलास को एक दिन तक उठाए रखता हूँ.....तो ?
मेरा हाथ.....यकीनन, बेहद दर्दनाक हालत में होगा, हाथ पैरालाइज भी हो सकता है और मैं हाथ को हिलाने तक में असमर्थ हो जाऊंगा।
लेकिन.....इन तीनों परिस्थितियों में गिलास के पानी का वजन न कम हुआ–न ज्यादा।
चिंता और दुःख का भी जीवन में यही परिणाम है।
यदि आप अपने मन में इन्हें एक मिनट के लिए रखेंगे.....
आप पर कोई दुष्परिणाम नहीं होगा.....
यदि आप अपने मन में इन्हें एक घंटे के लिए रखेंगे.....
आप दर्द और परेशानी महसूस करने लगेंगे.....
लेकिन यदि आप अपने मन में इन्हें पूरा दिन बैठाए रखेंगे.....
तो चिंता और दुःख.....हमारा जीना हराम कर देंगे.....हमें पेरालाइज़ करके कुछ भी सोचने–समझने में असमर्थ कर देंगे.....
और याद रहे.....
इन तीनों परिस्थितियों में चिंता और दुःख जितना था, उतना ही रहेगा.....
इसलिए.....यदि हो सके तो.....अपने चिंता और दुःख से भरे ''गिलास'' को.....
एक मिनट के बाद.....
नीचे रखना न भूलें.....।

पकड़ प्रीत की डोर
मानव पकड़ प्रीत की डोर

डॉ. जगदीश डागर
पूर्व क्षेत्रीय निदेशक
क.रा.बी. निगम

फैला जग में यूं अंधियारा
कोई किसी को लगे न प्यारा
सुना प्रेम संगीत जगत को
मिटे नफरत का भोर
मानव पकड़ प्रीत की डोर। मानव पकड़ प्रीत की डोर।

आपा–धापी रैन दिवस की
कोई सुनता न एक विवश की
आंसू पोंछ किसी दुखिया के
कर उपकारों की भोर
मानव पकड़ प्रीत की डोर। मानव पकड़ प्रीत की डोर।

मत सोचो कोई अपना कब है
जिसका न कोई उसका रब है
उसकी उस पर छोड़ो भैया
चले न कोई जोर
मानव पकड़ प्रीत की डोर। मानव पकड़ प्रीत की डोर।

क्या लाए थे क्या ले जाना
सबका छूटे यहां खजाना
मालिक को मालिक रहने दो
मत कर मन कमजोर
मानव पकड़ प्रीत की डोर। मानव पकड़ प्रीत की डोर।

जो मांगा था नहीं मिला तो
दिल टूटेगा किया गिला तो
चाहत से भी ज्यादा दे दे
उसका ओर न छोर
मानव पकड़ प्रीत की डोर। मानव पकड़ प्रीत की डोर।

इच्छाएं नहीं होती पूरी
वही मिले जो हमें जरूरी
अंधों को तो नूर मिला है
गूंगा गाए ज्यों मोर
मानव पकड़ प्रीत की डोर। मानव पकड़ प्रीत की डोर।

गलती

अनिल कुमार राठौर
सहायक
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

कहते हैं, गलती किसी से भी हो सकती है और किसी गलती का नतीजा कुछ नई बात भी हो सकती है, जैसे :–

- अगर एक हेयर ड्रेसर गलती करे, तो वह नया स्टाइल कहलाता है।
- अगर एक ड्राईवर गलती करे, तो वह नया रास्ता बन जाता है।
- अगर एक इंजीनियर गलती करे, तो वह नया वेंचर बन जाता है।
- अगर एक नेता गलती करे, तो वह कानून बन जाता है।
- अगर एक साइंटिस्ट गलती करे, तो वह नई खोज हो जाती है।
- अगर एक टेलर गलती करे, तो वह नया डिज़ाइन बन जाता है।
- अगर एक टीचर गलती करे, तो वह नई थ्योरी कहलाती है।
- अगर एक कार्मिक गलती करे, तो वह नया आइडिया हो जाता है।

इसलिए गलतियों से डरें नहीं, अपितु हर पल सकारात्मक सोच के साथ कुछ नया करते हुए आगे बढ़ें।

मासूम की दुआ

अमन सूद 'तन्हा'
प्रवर श्रेणी लिपिक
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय

बड़ी शिद्दत से मांगी थी दिल ने, मासूम की दुआ
कबूल है, कबूल है, कबूल न हुआ

जिस्म मेरा, दफना के सबने, सोचा कि मैं मिट गया
अज्म, अब भी कायम है, वो धूल न हुआ

अल्फाज बदल-बदल के यहां, बदले गए हैं मायने
गुनाह फिर भी गुनाह रहा, वो भूल न हुआ

तफतीश में निकला था वजह तलाशने नाकामियों की,
खार भीतर का खार ही है, फूल न हुआ

"तनहा" तेरी तनहाइयाँ, मिट तो जाती यहाँ मगर
तू तनहा रहा, महफिल में भी, मशगूल न हुआ।

हिंदी बिना जीना नहीं

भूप सिंह यादव
अर्थ मंत्री
केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद्

हिंदी बिना जीना नहीं, हिंदी बिना जीना नहीं
अंग्रेज़ी रट–रट, बहाना पसीना नहीं।

अंगरेज़ चले गए
अंग्रेज़ी छोड़ गए
सिर पर पैर रख
आधी रात दौड़ गए
छूटी छोड़ी भगोड़ी को
कहते हसीना नहीं
हिंदी बिना जीना नहीं, हिंदी बिना जीना नहीं।

हिंदी का है बोलबाला
प्रेमी व्यवहार में
अंग्रेज़ी अग्नि उगले
क्रूर तकरार में
क्रोध में न देखी भाषा
ऐसी शोभाहीना कहीं
हिंदी बिना जीना नहीं, हिंदी बिना जीना नहीं।

हिंदी देव कलश में
देवत्व झलकता
अक्षरों से लबालब
अमृत छलकता
सीखने बोलने में
लगता महीना नहीं
हिंदी बिना जीना नहीं, हिंदी बिना जीना नहीं।

पीयूटी को पुट कहें तो
सीयूटी को कट क्यों
बीयूटी को बुट नहीं
बोलते हैं बट क्यों
संगणक ने इसे
उच्च अंक दीना नहीं
हिंदी बिना जीना नहीं, हिंदी बिना जीना नहीं।

भारती ने पैदा किए
वीर–धीर क्रांतिकारी
हिंदी ही तो जानती थी
लक्ष्मीबाई, झलकारी
लंदनजा को चाहे
झाँसी और बबीना नही
हिंदी बिना जीना नहीं, हिंदी बिना जीना नहीं।

फ्रांस रूस जापान
न कोई इसे बोलता
कोरिया सरीखा नहीं
कद्दू भाव तोलता
देशभक्तों हेतु यह
दुर्लभ नगीना नहीं
हिंदी बिना जीना नहीं, हिंदी बिना जीना नहीं।

फिरंगी भाषा में निरा
फीका स्वाद रंग है
शब्द संपदा हिंदी की
समृद्ध दबंग है
आंग्ली पर मरें मिटें
ऐसी हमारी सीमा नहीं
हिंदी बिना जीना नहीं, हिंदी बिना जीना नहीं।

मेरी प्यारी मातृभाषा
भारत की शान है
कोटि कंठ कोकिला
दिव्य दीप्तिमान है
परदेशिनी को अब
लगाना है सीना नहीं
हिंदी बिना जीना नहीं, हिंदी बिना जीना नहीं।

बधाइयाँ

श्री अमित कुमार सिंह एक ऐसा नाम जिनके अथक प्रयास ने क.रा.बी. निगम अस्पताल, तिरुनेलवेली को राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन तथा प्रगति की दिशा में सराहनीय कार्य करने के लिए उन सभी क.रा.बी. निगम की इकाइयों, जिनमें सहायक निदेशक (राजभाषा) / अनुवादक तैनात नहीं हैं, के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

श्री अमित कुमार सिंह की नियुक्ति दिनांक 24.8.2012 को निगम में हुई तथा वे क.रा. बी. निगम अस्पताल, तिरुनेलवेली में बहुकार्य स्टाफ के पद पर तैनात हैं। उन्हें दैनिक कार्य, प्रेषण कार्य आदि के अलावा राजभाषा संबंधी कार्य भी आवंटित किया गया है। अस्पताल की वर्ष 2014–15 की हिंदी प्रगति से संबंधित विभिन्न रिपोर्टों तथा प्रतियोगिताओं हेतु प्रपत्रों में दर्शाई गई सूचना की समीक्षा करते हुए यह ज्ञात हुआ कि वहां राजभाषा संवर्ग का कोई कार्मिक न होने के बावजूद श्री अमित कुमार सिंह द्वारा हिंदी में सराहनीय कार्य किया जा रहा है। हिंदीतर भाषी क्षेत्र होने पर भी वे वहां के कार्मिकों को हिंदी में कार्य के प्रति निरंतर प्रोत्साहित तथा जागरूक करते रहते हैं।

यह सत्य है कि बिना मार्गदर्शक के यह उपलब्धि प्राप्त कर पाना दुर्लभ है। उल्लेखनीय है कि उक्त अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. रविन्द्र कुमार शर्मा (फरवरी, 2014 से तैनात) के मार्गदर्शन से इस प्रयास को सफलता प्राप्त हो सकी तथा इस दिशा में श्री अमित कुमार सिंह एक कर्मयोगी की भांति कार्य किए जा रहे हैं।

श्री अमित कुमार के हिंदी प्रेम तथा कार्य के प्रति उनकी लगन के लिए साधुवाद।

विशेष उपलब्धि

श्री जी.सी. दर्जी, वर्तमान में कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय में संयुक्त निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। इनके सुपुत्र श्री मृदुल कच्छावा को भारतीय प्रशासनिक सेवा (आइ.ए.एस.) परीक्षा वर्ष 2014, जिसका परिणाम संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली द्वारा 04 जुलाई, 2015 को घोषित किया गया था, में 216वीं रैंक प्राप्त हुई है। फलस्वरूप इन्हें भारतीय पुलिस सेवा आवंटित की गई एवं दिसम्बर, 2015 से ये सरदार वल्लभ भाई पटेल नेशनल पुलिस अकादमी, हैदराबाद में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा–2013 में भी इन्हें प्रथम प्रयास में इंडियन पोस्ट एण्ड टेलीकॉम फाइनेंस एकाउंट्स सेवा आवंटित की गई थी। वर्ष 2013 में ही संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सहायक कमांडेंट की भर्ती परीक्षा में भी इन्हें अखिल भारतीय स्तर पर 27वीं रैंक प्राप्त हुई थी, जिसमें इन्हें केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल आवंटित किया गया। साथ ही इन्हें नेट (कॉमर्स) परीक्षा में फैलोशिप प्रदान की गई।

हम कामना करते हैं कि वे देश सेवा एवं प्रगति पथ पर सदैव अग्रसर रहें।

आपका पत्र मिला

पत्रिका का नाम ही अपने आप में अद्वितीय है, जैसे इंद्रियां पांच होती हैं, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार और किसी भी कार्यक्रम के पहले जलाने वाले दीप में पांच लौ होती हैं, वैसे ही **'पंचदीप'** शीर्षक अपने–आप में सब कुछ कह जाता है। 'शब्दावली चर्चा' लेख अपने आप में गागर में सागर भरने वाला है। 'एक टुकड़ा अपने लिए' कविता जयशंकर प्रसाद की कविता की याद दिलाती है 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी'। शेष लेख भी अपने आप में विविधता लिए हुए हैं।

अनिल मेहता, वरिष्ठ कार्यपालक सचिव
पावर सिस्टम ऑपरेशन कोरपोरेशन

मुख्यालय की गृह पत्रिका **'पंचदीप भारती'** का 10वां अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक चेतना को आकार देती है। हमेशा की तरह पत्रिका का आवरण पृष्ठ, साजसज्जा, निहित रचनाएं, लेख, कविताएं अत्यंत रोचक, उपयोगी और उत्कृष्ट हैं। 'विदेह की व्यथा', 'ऑनलाइन प्राइवेसी', 'मेरे वी.आई.पी. का सपना', 'जीयो पेंसिल की तरह', 'योग का महत्त्व', 'हिंदी भाषा राष्ट्र दुलारी', 'आधुनिक उपयोगी हिंदी सॉफ्टवेयर' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय हैं। पत्रिका में विभिन्न कार्यक्रमों की झलक कार्मिकों की क्रियाशीलता का परिचायक है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई तथा आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

सोम्येन्दु विश्वास, क्षेत्रीय निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, फरीदाबाद, क.रा.बी. निगम

आपके द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका **'पंचदीप भारती'** की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण मनमोहक एवं प्राकृतिक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, रचनाएं, कविताएं रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी हैं। मुद्रण स्तरीय है। छायाचित्रों के प्रकाशन में पत्रिका को और भी अधिक रुचिकर बना दिया है।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका की यात्रा अनवरत चलती रहेगी।

आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

रीना हीरा, सहायक निदेशक (राजभाषा प्रभारी)
क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद, क.रा.बी. निगम

आपके निर्देशन में प्रकाशित गृह पत्रिका **'पंचदीप भारती'** का 10वां अंक मुझे प्राप्त हुआ है। इस पत्रिका में सभी विषयों का समावेश है। यह पत्रिका बहुत ही सारगर्भित है। इस पत्रिका में सम्मिलित लेख एवं कविताएं बहुत ही रोचक हैं। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए आपकी कोटि–कोटि प्रशंसा करता हूँ। आने वाले भविष्य में आप निश्चित रूप से इस पत्रिका को प्रकाशित करते रहेंगे। मैं केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् की ओर से आपको हार्दिक शुभकामनाएं दे रहा हूँ।

डॉ. आर.पी. राय, हिंदी अधिकारी
केन्द्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्

मुख्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका **'पंचदीप भारती'** के 10वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका की साज–सज्जा तथा पृष्ठ संयोजन उच्चकोटि का है।

इसमें रचना वैविध्य है। ज्ञानवर्धक लेख, कविता, विभिन्न अवसरों के छायाचित्रों से सुसज्जित इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट हैं। रचनाओं में 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में योग का महत्त्व....', 'जीयो पेंसिल की तरह' विशेष सराहनीय हैं। 'ऑनलाइन प्राइवेसी' तथा 'आधुनिक उपयोगी हिंदी सॉफ्टवेयर' जैसी रचनाएं आधुनिक तकनीक से जोड़ती हैं तथा संग्रहणीय हैं। आशा है कि आगे भी यह पत्रिका हमें नई जानकारियों से अवगत कराती रहेगी। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद।

पंकज कुमार, उप निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना, क.रा.बी. निगम

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की गृह पत्रिका **'पंचदीप भारती'** जैसा नाम–वैसा काम की कसौटी पर खरी उतरी है। वास्तव में यह पत्रिका 'गागर में सागर' एवं बड़ा मनोहारी कलेवर समेटे हुए बड़ी आकर्षक साज–सज्जा के साथ पाठकों की रुचि तथा मानकों की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार की निरन्तर गंगा बहती रहे, जिससे राष्ट्र को नई दिशा मिले, ऐसी शुभकामनाओं के साथ।

भूप सिंह यादव, अर्थ मंत्री
केंद्रीय सचिवालय, हिंदी परिषद्

आपकी हिंदी गृह पत्रिका **'पंचदीप भारती'** वर्ष 2015 अंक–10 की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पुस्तक के सफल प्रकाशन में संपादक मंडल का सराहनीय कदम है। इस अंक में लेख, कविता एवं छायाचित्र अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। हिंदी भाषा में 'एक टुकड़ा अपने लिए', 'जीयो पेंसिल की तरह', 'ऋण विहीन पंछी', 'जाको राखे साइयां'....., विशेष रूप से पठनीय हैं। पत्रिका का फोटो संग्रह बहुत आकर्षक है। वर्ष 2016–17 आगामी अंक के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

एम.डी. मीना, उप निदेशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे, क.रा.बी. निगम

पत्रिका में छपी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय हैं। पत्रिका में छपे सभी लेख विविधमुखी एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर 'विदेह की व्यथा' में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक तथ्य को मार्मिकता से प्रस्तुत किया गया है, 'ऑनलाइन प्राइवेसी' में आज के बढ़ते साइबर क्राइम से बचने के संभव उपाय सुझाए गए हैं तथा 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में योग का महत्त्व, उपयोगिता एवं उपलब्धता' योग का परिचय एवं आधुनिक जीवन में इसकी सार्थकता को रेखांकित करती है। पत्रिका का प्रकृतिपरक मुखपृष्ठ आकर्षक एवं मनोहारी है। पत्रिका से अधिकारियों एवं कार्मिकों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम एवं रचनात्मक प्रतिभा का परिचय मिलता है। कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों के साक्षीस्वरूप सम्मिलित छायाचित्रों ने पत्रिका को और भी रोचक बनाया है।

जानकी सिंह, उप निदेशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, क.रा.बी. निगम

'पंचदीप भारती' बहुरंगी और आकर्षक है, जिसमें कार्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य बहुत सी गतिविधियों का संकलन है।

निस्संदेह 'पंचदीप भारती' आकर्षक, स्तरीय है, इसमें 'ऑनलाइन प्राइवेसी', 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में योग का महत्त्व, उपयोगिता एवं उपलब्धता' और 'आधुनिक उपयोगी हिंदी सॉफ्टवेयर' संग्रहणीय लेख हैं।

गौतम कुमार मीणा, सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, दिल्ली

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'पंचदीप भारती' के दसवें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख एवं रचनाएं सृजनात्मकता से ओत–प्रोत हैं। डॉ. पन्ना प्रसाद की 'विदेह की व्यथा', श्री क्षेत्रपाल शर्मा की 'ऑनलाइन प्राइवेसी', डॉ. असीम लोगानी की 'जीयो पेंसिल की तरह' विशेषकर अच्छी हैं। संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. पी.आर. वासुदेवन, हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु

निगम इकाइयों में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

उप क्षेत्रीय कार्यालय, एरणाकुलम

उप क्षेत्रीय कार्यालय, रोहिणी

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्लम

ईएसआइसी - 2.0
चिंता से मुक्ति

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री, भारत

दिल्ली के ऑटो रिक्शा चालकों के लिए ई.एस.आइ.सी. की चिकित्सा सुविधा की शुरूआत

दिल्ली में योजना के लिए पंजीकरण 15-04-2016 से प्रारम्भ

मुख्य विशेषताएं :

- ई.एस.आइ. अस्पतालों में उपलब्ध सभी चिकित्सा सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं
- ओपीडी में प्रति वर्ष प्रति परिवार 1500 रुपए तक की दवाइयों का नि:शुल्क वितरण
- व्याप्ति में स्वयं, पत्नी एवं 21 वर्ष से कम आयु के दो बच्चे शामिल हैं
- पंजीकरण के दिन से ओपीडी उपचार पाने की सुविधा
- चौथे महीने से आंतरिक उपचार पाने की सुविधा
- व्याप्ति की आयु सीमा 60 वर्ष है
- पंजीकरण के समय 6 महीनों का अग्रिम अंशदान देना होगा। तत्पश्चात्, तिमाही भुगतान की सुविधा
- मासिक उपभोक्ता अंशदान ₹ 250 + सेवा कर है।

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय
Ministry of Labour & Employment
भारत सरकार (Government of India)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
वेबसाइट: www.esic.nic.in, www.esic.in, www.esichospitals.gov.in

अधिक जानकारी के लिए कृपया ईएसआइसी के दिल्ली स्थित क्षेत्रीय कार्यालय, राजेन्द्र प्लेस/ उप–क्षेत्रीय कार्यालय, रोहिणी एवं ओखला/ प्रभागीय कार्यालय, नन्द नगरी और शाखा कार्यालय– पालम, आश्रम, अशोक विहार, नांगलोई, करमपुरा, मोरी गेट, किशनगंज एवं शाहदरा से सम्पर्क करें अथवा **www.esic.nic.in** पर लॉग ऑन करें या टोल फ्री नं. 1800 11 2526 पर कॉल करें।